प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट
सातवीं वार्षिक रिपोर्ट
अप्रैल 2005–मार्च 2006

ए– 708, आनंद लोक
मयूर विहार–1
दिल्ली–110091
दूरभाष/फैक्स 011–22752375

ट्रस्टी

अमर्त्य सेन	चेयर	लामों यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, इकॉनामिक्स एंव फिलोसॉफी हावर्ड यूनिवर्सिटी अमेरिका
अंतरादेव सेन	मैनेजिंग ट्रस्टी	संपादक, द लिटिल मैगजीन, दिल्ली, भारत
आर के पी शंकरदास	ट्रस्टी	वरिष्ठ अधिवक्ता, दिल्ली भारत

सलाहकार

एम्मा रौथस्चाइल्ड	फेलो, किंग्स कॉलेज, कैब्रिज यूके.
एम एस स्वामीनाथन	चेयरमैन, एम एस फाउंडेशन, चेन्नई, भारत
नवनीता देवसेन	शिक्षाविद् और लेखिका, कोलकता, भारत
प्रतीक कांजीलाल	प्रकाशक, द लिटिल मैगज़ीन, भारत दिल्ली
यशोधरा बागची	शिक्षाविद्, कोलकता, भारत

परिचय

कोलकता में प्राथमिक शिक्षाः प्रारंभिक निष्कर्ष

आमर्त्य सेन

पश्चिम बंगाल में प्राथमिक शिक्षा की हालत प्रतीची रिसर्च टीम के लिए कई साल से चिंता का विषय रहा है, और हम पश्चिम बंगाल के छह जिलों (वीरभूम, में दिनीपुर, पुसलिया, बर्द्धमान, युर्शिदाबाद और दार्जलिंग) और पड़ोसी राज्य झारखंड के दुमका जिले के प्राथमिक स्कूलों और शिक्षा संस्थानों की जांच पर अपनी रिपोर्ट जनता के समक्ष रख चूके हैं। हम पूर्वी भारत के दो जिलों (पश्चिम बंगाल के वीरभूम और झारखंड का दुमका जिला) में प्राथमिक स्वास्थ्य पर अपने अध्ययन के नतीजों से वाकिफ करवा चुके हैं।

पिछले वर्ष तक हम कोलकता में प्राथमिक शिक्षा पर ध्यान नहीं दे पाये, हालांकि हमने इस महानगर में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति को लेकर स्वाभाविक जिज्ञासा थी। हमारी इच्छा को बल मिला कोलकता नगर निगम के अनुरोध से, जिमें हमें निगम के स्कूलों में दी जा रही शिक्षा पर अध्ययन करने को कहा गया। इसी अध्ययन के कुछ प्रारंभिक निष्कर्ष इस संक्षिप्त रिपोर्ट में है। कोलकता नगर निगम को कुछ समस्याएं होने का आभास था, जिनके तत्काल हल की जरूरत थी। हमारी रिपोर्ट में कुछ हैरतअंगेज नहीं था– लेकिन हम यानी प्रतीची ट्रस्ट की रिसर्च टीम, आत्ममंथन की भावना का सम्मान करते है, जो इस महान शहर की एक महान परंपरा नहीं है। और निगम भी आत्ममंथन की इस परंपरा से अछूता नही था। हमें उम्मीद है मौजूदा हालात पर आलोचनात्मक सुझावों, से भविष्य मे नीति–निर्धारण और उसके अमल के लिए महत्वपूर्ण दिशा–निर्देश की पहचान में मदद करेंगे।

हमारा ध्येय और दिशा

प्रतीची टीम की जांच के तरीके में सीमित संख्या में – संस्थानों का बेहद ध्यान से अध्ययन कर दी गयी सूचनाओं को न केवल जमीनी हकीकत के मद्देनजर पर रखना था, बल्कि बातचीत और इंटरव्यू के माध्यम से निष्कर्ष पर पहुचंना था। लिहाजा, हमारा फोकस सर्वेक्षण की लंबाई–चौड़ाई पर नहीं बल्कि उसकी गहराई पर था। ये ध्यान रखना जरूरी है, क्योंकि हम नहीं चाहते कि ये माना जाये कि हमारे निष्कर्ष कोलकता के सभी स्कूलों के लिए सच माने जाये। स्कूलों का चयन हालांकि नमूनों के तौर पर किया गया लेकिन इनके अध्ययन से निकले निष्कर्ष अगर सभी स्कूलों के लिए सही माने जा सकते है, तो कुछ सैंपालिग गलततियों की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता इसलिए हमने चुना गहराई से अध्ययन का रास्ता, जिसमें शिक्षकों अभिभावकों और बच्चों से व्यापक इंटरव्यू, और स्कूलों की शैक्षणिक उपलब्धियों का नापने का हमारा अपना तरीका शामिल था। और, चुना भी हमने कुछ स्कूलों को ही, ताकि वहां जो दरअसल हो रहा है, उसका पता लगाया जा सके, ना कि उन तमाम सूचनाओं पर निर्भर रहे, जो प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में संलग्न स्कूल संबंधित मंगाया या दफ्तरों द्वारा अधिकारिक तौर पर उपलब्ध करवाये जाते है।

हमने कोलकता नगर निगम के प्राथमिक स्कूलों के साथ–साथ निगम द्वारा चलाये जा रहे शिशु शिक्षा केंद्रों का भी अध्ययन किया। हमने कोलकता प्राथमिक स्कूल परिषद् द्वारा चलाये जा रहे सरकारी स्कूलों के लिए एक बड़े सैंपल का भी अध्ययन किया। हमारी दिलचस्पी इन तीनों गैर निजी स्कूलों की श्रेणियों में थी, ताकि कुछ हद तक इनकी कार्यप्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकें।

व्यापक तस्वीर

नगर निगम संचालित स्कूलों और सरकारी स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति कुल मिलाकर निश्चय ही अच्छी नहीं है। एक तरफ, हम अभिभावकों द्वारा बच्चों लड़के–लड़कियों दोनों को अच्छी शिक्षा उपलब्ध करवाने की अपनी प्रतिबद्धता से प्रभावित हुए। दूसरी ओर, भारत में प्राथमिक शिक्षा की बद्हाली के लिए जिम्मेदार बताया जाने वाला तर्क यानी अभिभावकों की उदासीनता या उनका विरोध–भी हमें कहीं देखने को नहीं मिला। हमें सरकारी और निगम के शिक्षण अधिकारियों में भी जागरूकता और खुला दिमाग देखने को मिला, इन लोगों में स्थिति को बेहतर बनाने के लिए तरीकों–सुझावों के प्रति गंभीरता देखने को मिली।

अभिभावकों, शिक्षकों, अधिकारियों और यूनियन नेताओं के एक बड़े समूह से बातचीत के अलावा हमने, काफी गहराई और विस्तार से, निगम के दस स्कूलों, निगम द्वारा संचालित पांच शिशु शिक्षा केंद्र और कोलकता जिला प्राथमिक, स्कूल परिषद् और कोलकता जिला प्राथमिक स्कूलों के संचालन और प्रदर्शन की जांच की। मौजूदा व्यवस्था में जो खामियां हमें दिखाई दी, वो हैं:

1. बच्चों का स्कूल न आना: स्कूल में उपलब्ध रिकॉर्ड के मुताबिक बच्चों की हाजिरी निगम स्कूलों में औसत 56 प्रतिशत, परिषद् संचालित सरकारी स्कूलों में 66 प्रतिशत और, निगम संचालित शिशु शिक्षक केंद्रों में और 76 प्रतिशत देखने को मिली।
2. बच्चों की कम शैक्षणिक उपलब्धियां: जिन बच्चों को सबसे कम नंबर यानी सौ में 0–20 के बीच मिले, उन बच्चों का प्रतिशत निगम स्कूलों में आठ, परिषद् संचालित सरकारी स्कूलों में तीन और शिशु शिक्षण केंद्रों में दो प्रतिशत रहा। ये आंकड़ा स्कूल रिकॉर्ड के अनुसार था। लेकिन हमारी निष्पक्ष जांच के बाद इन आंकड़ों में सुधार पाया गया। जांच में निगम स्कूलों में ये प्रतिशत 25, सरकारी स्कूलों में 16 और शिशु शिक्षण संस्थानों में ये 22 प्रतिशत देखा गया।
3. स्कूलों के प्रदर्शन पर अभिभावकों में असंतोष: हमारी जांच के मुताबिक जो अभिभावक अपने बच्चों के स्कूल के काम–काज से नाखुश थे, उनका प्रतिशत निगम स्कूलों में 51, सरकारी स्कूलों में 37 और शिशु शिक्षण केंद्रों में 38 प्रतिशत था। इस बात के सबूत है। अभिभावकों में असंतोष खासकर, शिशु शिक्षण केंद्रों में सुविधाओं के अभाव के कारण ज्यादा है।

4. <u>शिक्षकों की हाजिरी में काफी अनियमितता और शिक्षकों के प्रदर्शन पर अभिभावकों में काफी असंतोषः</u> शिक्षकों के प्रदर्शन पर जो अभिभावक खुश नहीं थे, उनका प्रतिशत निगम स्कूलों में 35, सरकारी स्कूलों में 20 और शिशु शिक्षण केंद्रो में आठ प्रतिशत रहा।
5. <u>शिक्षक–अभिभावक कमेटियों की निष्क्रियताः</u> जिन अभिभावकों को ये पता ही नहीं, कि स्कूलों में शिक्षण–अभिभावक कमेटियां है, उनका प्रतिशत निगम स्कूलों में 100 सरकारी स्कूलों में 73 और शिशु शिक्षण केंद्रों में 54 प्रतिशत था।
6. <u>प्राइवेट ट्यूशन पर अत्यधिक निर्भरताः</u> इन सभी स्कूलों के जो बच्चे प्राइवेट ट्यूशन लेने में सक्षम थे, उनकी प्राइवेट ट्यूशन पर अत्यधिक निर्भरता देखी गयी, शिक्षण सुविधाओं पर स्वयं एक प्रतिकूल टिप्पणी है। सरकार द्वारा संचालित स्कूलों के 73 प्रतिशत बच्चे प्राइवेट ट्यूशन पर निर्भर थे। ये प्रतिशत निगम संचालित स्कूलों और शिशु शिक्षण केंद्रों में कम देखा गया। निगम संचालित स्कूलों में ये प्रतिशत 45 और शिशु शिक्षण केंद्रो में ये 50 प्रतिशत रहा। निष्कर्ष ये कि ये निगम संचालित स्कूलों और शिशु केंद्रों में ये प्रतिशत कम होता। अगर यहां पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावक आर्थिक रूप से अधिक सक्षम होते।
7. <u>प्रत्येक श्रेणी के विभिन्न स्कूलों के बीच व्यापक अंतरः</u> हर श्रेणी विभिन्न स्कूल के बीच ही अंतर पाया गया। शिक्षकों में अपने काम के प्रति गंभीरता और कुछ कर दिखाने की इच्छा, और शिक्षक–अभिभावक कमेटियां जहां सक्रिय है, ये दोनों बातें तय करती है कि बच्चे वहां सरकार और शहर प्रबंधकों से क्या हासिल कर पाते है।
8. <u>गरीबतम परिवारों में बच्चों का अलग–अलग पढ़नाः</u> ये वहां–वहां देखा गया, जहां निगम संचालित स्कूल या शिशु शिक्षा केंद्र आस–पास नहीं है, और जहां सरकारी स्कूल (इनमें कई सकूल) बच्चों से भरती के लिए और मासिक फीस के रूप में पैसा जमा करवाते है।
9. <u>स्कूलों की निरीक्षण–प्रणाली की विफलताः</u> कोलकता की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था में निरीक्षण–प्रणाली की विफलता व्यापक रूप से देखी जा सकती है। बल्कि कोलकता जिला प्राथमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित सरकारी स्कूलों में भी निरीक्षण प्रणाली का यही हाल है–जबकि यहां निरीक्षण प्रणाली एक समान होनी चाहिए। दरअसल परिषद् द्वारा संचालित 15 स्कूलों में, जिन्हें प्रतीची जांच में शामिल किया गया, इनमें से आठ स्कूलों में बीते वर्ष एक भी निरीक्षक नहीं पहुंचा।

<u>भविष्य की राह</u>

उपरोक्त दर्शायी गयी संक्षिप्त रिपोर्ट (विस्तृत रिपोर्ट बाद में अलग से प्रकाशित की जायेगी) में जो समस्याएं दिखाई गयी हैं, उनसे साफ जाहिर है कि ध्यान कहां–कहां देने की जरूरत है, वे हैंः

1 सभी स्कूलों के लिए निरीक्षण व्यवस्था को तत्काल पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। इनमें सरकारी स्कूल भी शामिल है, जहां ये निरीक्षण प्रणाली मौजूद, तो है, लेकिन देखने को नहीं मिलती।

2 हमने शिक्षक संगठनों–यूनियनों का सहयोग चाहिए, जो सदस्य होने के नाते अपनी जिम्मेदारी निभाते तो निभाते ही है। स्कूलों से गायब रहने वाले शिक्षकों, जिनसे समूचे शिक्षक समुदाय पर आंच आती है और बदनामी होती है, ऐसे शिक्षकों पर अंकुश लगाने में भी सहयोग कर सकें। हमें शिक्षक संगठनों में जिनमें पश्चिम बंगाल का सबसे बड़ा शिक्षक संगठन भी शमिल है, ये भावना दिखाई दी कि वे अपने नेतृत्व में स्थिति से निपटने के लिए आतुर हैं।

3 अभिभावक–शिक्षक कमेटियों को तत्काल पुनर्जीवित करने की जरूरत है। कुछ मामलों में तो इन कमेटियों को दोबारा अस्तित्व में लाने की आवश्यकता है। इसके अलावा शहर के लिए एक शिक्षण योजना की जरूरत है, ताकि शिक्षा के इस महत्वपूर्ण हिस्से यानी प्राथमिक शिक्षा को बेहतर और प्रभावी बनाया जा सकें। पश्चिम बंगाल के कुछ ग्रामीण आंचलों में ये हो भी रहा है। और ये शर्मनाक होगा राज्य का सबसे बड़ा शहर, इस मामले में गांवों से पिछड़ जाये।

4 बुनियादी शिक्षा के अधिकार का अभाव, जो प्राइवेट ट्यूशन की जरूरत के रूप में परिलक्षित होता है, उसे स्कूलों की गुणवत्ता और स्तर बढ़ा कर निपटा जा सकता है। लेकिन तत्काल आवश्यकता इस बात की है कि सबसे पहले इसे अप्रिय समस्या के रूप में स्वीकारा जाये। दुनिया के किसी भी हिस्से में प्राथमिक शिक्षा पा रहे बच्चों में अतिरिक्त प्राइवेट ट्यूशन की जरूरत नहीं पड़ती है।

इसलिए, ये मानना पड़ेगा कि कोलकता के स्कूलों की इस समस्या को महानगर की बड़ी आबादी की कमजोर आर्थिक स्थिति और जटिल बनाती है। कोलकता जिला प्राथमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित स्कूलों में जहां विविभन्न तबके और अलग–अलग पृष्ठभूमि वाले परिवारों के बच्चे आते है (इनमें कुछ तो इतने सक्षम होते है कि वे अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेज सकते है) वहीं कोलकता नगर निगम द्वारा संचालित स्कूल और शिशु शिक्षक संस्थानें के ज्यादातर बच्चे गरीब परिवेश से आते हैं। ऐसे में कुछ निगम संचालित स्कूलों का प्रदर्शन बाकि की तुलतना में बेहतर होता है और शिशु शिक्षण केंद्रों में शिक्षकों में काम–काज ने हमें प्रभावित किया, जहां बच्चों को स्कूल न आना आम बात है, शिक्षकों के काम–काज में अनियमितताएं कम है, और शिक्षकों के काम काम–काज से अभिभावक ज्यादातर संतुष्ट है और जहां ज्यादातर अभिभावक–शिक्षक कमेटियां न केवल सक्रिय है, बल्कि प्रभावी भी है। इनकी तुलना में शिशु शिक्षा केंद्र निश्चय ही सुविधाओं के अभाव से ग्रसित है– और इस क्षेत्र के लिए राज्य और शहर दोनों को ही और उदार होने की जरूरत है। लेकिन इन शिक्षा केंद्रों में शिक्षकों के समर्पण और गंभीरता क्या नतीजे ला सकती है, ये भी हमें देखने को मिला। अंत में, नियमित दोपहर का तैयार भोजन देने की व्यवस्था, जिसकी वकालत प्रतीची रिसर्च टीम कई वर्षो से करती रही है, और जो कई ग्रामीण आंचलों में आज उपलब्ध भी है, उनका पश्चिम बंगाल की राजधानी में पूरा अभाव खलता है। पोषण की इस व्यवस्था का महत्व और स्कूलों में हाजिरी और बच्चों के प्रदर्शन

के संबंधों का महत्व, पश्चिम बंगाल के ग्रामीण अंचलों में हमारे अनुसंधानों में साबित हो चुका है। और ये आवश्यक है कि इस मामले में कोलकता पिछड़ा न रह जाये।

जरूरतों को पूरी तरह समझने में तमाम सामाजिक मुद्दों की तरह, वर्ग–विभाजन एक बड़ी बाधा बनता है। संपन्न और आर्थिक रूप से सक्षम परिवारों से आने वाले बच्चों के लिए दोपहर के तैयार भोजन ज्यादा आकर्षक नहीं रहता। (इन परिवारों का मानना है कि दोपहर के भोजन की क्वॉलिटी निम्न स्तरीय होती है। और ये ही प्रशारित होता है। जिन परिवारों और बच्चों को दोपहर के भोजन की जरूरत है, उनकी जरूरत मीडिया तक पहुंच न होने के कारण प्रशारित नहीं हो पाती हैं–और उनकी जरूरत की तरफ पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा पाता। एक ऐसे ही अफसर, जिससे हमने बात की, हैरान दिखे कि दोपहर का भोजन इतनी बड़ी बात है। उन्होंने हमसे सवाल किया कि ''क्या बच्चे घर में नहीं खाते, क्या उनकी माताएं उन्हें टिफिन नहीं देतीं?''

कोलकता जैसे विशाल– और खूबसूरत शहर में प्राथमिक शिक्षा के लिए एक प्रभावी और समान व्यवस्था बनाने के लिए, हमें कई बाधाओं को दूर करना होगा–जिनमें परंपराएं, आदतें, बदलाव के प्रति विरोध और सीमित सामाजिक सोच। और कोलकता शहर में उसके बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था में बुनियादी बदलाव न केवल बेहद जरूरी है, बल्कि एकदम तात्कालिक भी।

I लक्ष्य

प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट के बुनियादी मकसद हैः

- मुख्यतः बुनियादी और प्राथमिक शिक्षा के मद्देनज़र, शिक्षा ने बढ़ावा देना।
- जरूरतमंदों, खासकर बाल कन्याओं के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य भी देखरेख के लिए काम करना।
- मानवीय विषयों, धर्मार्थ गतिविधियों के लिए और सामाजिक समानता की दिशा में काम करना।

II वर्ष 2005–2006 में गतिविधियां

प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट के लिए ये वर्ष भी काफी गतिविधिपूण रहा। पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन में केंद्रित, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर अनुसंधान, इस वर्ष भी गतिविधियों का मुख्य केंद्र रहा। अनुसंधान के अलावा मानवीय और धमार्थ गतिविधियां भी प्रमुखता में रहीं। साक्षरता अभिमान, सात ग्रामीण पुस्तकालय, नागरी स्थित प्रतीची स्कूल, ग्रामीणों द्वारा चलाये जा रहे ग्रामीण स्कूल में अप्रशिक्षित गांव वालों को सक्षम बनाने का काम और ओड़िसा में ट्रस्ट द्वारा शुरू किये गये विकास कार्यक्रम का भी प्रभाव बढ़ा। ये कहने की जरूरत नहीं कि प्रतीची रिसर्च टीम द्वारा किये गये अनुसंधान प्रोजेक्टों ने भी वर्ष 2005–2006 में महत्वपूर्ण तरक्की की। प्रतीची रिसर्च टीम द्वारा प्रकाशित रिसर्च और अनुसंधान रिपोर्टो ने नीति–निर्धारण करने वालों और मीडिया में अपनी उपस्थिति दर्ज की है, और केंद्र सरकार और राज्य स्तर पर महत्वपूर्ण सरकारी पहल में आधार बनी हैं।

III प्रतीची रिसर्च टीमः शोध और नीतिगत वकालत

(i) कोलकता में प्राथमिक शिक्षा की जन–उपलब्धता:

सात अगस्त, 2005 को कोलकता के ताज बंगाल होटल में खलरनवीसों और विद्वानों का शानदार जमावड़ा हुआ। इस समारोह में प्रोफेसर अमर्त्य सेन ने 'सर्वेक्षण के प्रारंभिक निष्कर्ष जारी किये, जो इस वार्षिक रिपोर्ट के आरंभ में छपे है। इस अनुसंधान सर्वे के तहत सूचनाएं इकट्ठा करने का काम पिछले वर्ष ही शुरू हो गया था। और इस वर्ष यानी 2005–2006 में थे सर्वे पूरा कर लिया गया। इस सर्वे में कोलकता के प्राथमिक शिक्षा के तीस भिन्न–भिन्न सरकारी संस्थानों को शामिल किया गया– इनमें कोलकत्ता नगर निगम के अधीन चल रहे 10 प्राथमिक स्कूलों ओर निगम द्वारा ही संचालित पांच शिशु शिक्षा केंद्र के अलावा कोलकता जिला प्राथमिक स्कूल परिषद् द्वारा संचालित 15 प्राथमिक स्कूल थे। अभी तक प्रतीची रिसर्च गतिविधियां, ज्यादातर ग्रामीण आंचलों तक ही सीमित रही थी, और ये पहला अवसर था जब इन गतिविधियों का केंद्र शहरी क्षेत्र बना। प्रतीची ट्रस्ट ने शहरी क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा की विभिन्न समस्याओं पर रिसर्च का फैसला कोलकता नगर निगम के अनुरोध पर किया। और इस सर्वे के नगर निगम के अधीन प्राथमिक स्कूलों मे हालात बहुत अच्छे नहीं पाये गये।

(ii)स्वसहयोगी ग्रुप और महिला अधिकारिता

इस विषय पर एक सर्वे पश्चिम बंगाल के दो जिलों कूच विहार और वीरभूम में किया गया था। इस सर्वे में लिए सूचनाएं इकट्ठा करने का काम पिछले वर्ष पूरा कर लिया गया था। इस सर्वें में जमा सूचनाओं का आंकलन अनुसंधान का काम और रिपोर्ट लिखने का काम पूरा कर लिया गया है। इस सर्वे का मुख्य मकसद था। ग्रामीण आंचल में कामकाजी महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक स्तर– इन कामकाजी महिलाओं की अर्थिक स्तर–इन कामकाजी महिलाओं की आर्थिक गतिविधियां और उससे आये आर्थिक–सामाजिक बदलाव और भावी संभावना की सही तस्वीर सामने लाना। इस सर्वे में स्वसहयोगी ग्रुपों के जरीये महिला अधिकारियों के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों की सीमाएं और खामियां तलाशने की भी कोशिश की गयी।

(iii) पश्चिम बंगाल में प्राथमिक स्कूली शिक्षा का स्तर:

पश्चिम बंगाल में प्राथमिक स्कूली शिक्षा का स्तर विषय एक रिपोर्ट तैयार करने का नाम भी प्रतीची टीम ने किया। इस रिपोर्ट के लिए हुए सर्वे का मकसद पश्चिम बंगाल में प्राथमिक शिक्षा की सही स्थिति– खासकर दोपहर के भोजन प्रणाली लागू होने के बाद और पिछले चार–पांच साल में आये बदलावों को रेखांकित करना था। इस सर्वे के लिए इस वर्ष राज्य भर के 44 स्कलों का अध्ययन किया, साथ ही इस बाबत उपलब्ध सरकारी आंकड़ों, मीडिया में

प्रकाशित–प्रसारित रिपोर्टो और अन्य अध्ययनों का भी इस रिसर्च में उपभोग किया गया।

(iv) भारत के अन्य भागों–खासकर केरल में प्राथमिक शिक्षा और बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं की स्थितिः प्रतीची टीम का दौरा

केरल में प्राथमिक शिक्षा और बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति जानने के लिए प्रतीची रिसर्च टीम ने 31 जनवरी 2006 से 6 फरवरी के बीच केरल का दौरा किया। टीम ने राज्य के दो जिलों में कुछ प्राथमिक स्कूलों और स्वास्थ्य केंद्रों का दौरा किया। इस यात्रा का लाभ प्रतीची टीम को न केवल केरल की मौजूदा स्थिति समझने को मिला बल्कि केरल में जिस तरह प्राथमिक शिक्षा और बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं को देखा जाता है, उस नजरियें में भी व्यापक परिपेक्ष्य में समझने का मौका मिला।

(v)<u>रिसर्च टीम सदस्यः प्रकाशनों–सेमिनारों मे भागीदारी</u>

(अ) प्रकाशन

(i) **<u>द प्रतीची हेल्थ रिपोर्ट</u>,** जिसमें प्रस्तावना प्रोफेसर अमर्त्य सेन की थी, का प्रकाशन अगस्त 2005 में हुआ, जिसे प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट के सहयोग से टी एल एम बुक्स ने किया। इसका उपशीर्षक था–

ए स्टडी ऑन डिलिवरी ऑफ पब्लिक हेल्थ इन वेस्ट बेंगॉल एंड झारखंड

(ii) <u>प्रतीची स्वास्थ्य प्रतिवेदन,</u> प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट, दिल्ली; इसका वितरण सुवर्णलेखा, कलकत्ता ने किया और ये प्रतीची हेल्थ रिपोर्ट का बंगला अनुवाद है।

(ब) <u>व्यक्तिगत प्रकाशन एंव रिसर्च योगदान</u>

(i) एस सांत्रा, टी बनर्जी एम कुंडू और ए मुखर्जी के सहयोग से राणा के, पब्लिक प्राइवेट इंटरफेस इन प्राइमरी एडुकेशनः ए केस स्टडी इन वेस्ट बेंगॉल, *इकोनॉमिक एंड पोलीटिकल वीकली, अंक* ***XL*** *, संख्या 15, 9 अप्रैल, 2005*

(ii) कुमार राणा, 'फूड फॉर थॉट' पश्चिम बंगाल में विभाजन पर एक रिपोर्ट जो द लिटिल मैगजीन, भाग 6 अंक एक एंव दो में सन् 2005 में प्रकाशित हुई।

(iii) एस सांगा, जॉय ऑफ फ्लाइंग, जिसका प्रकाशन द लिटिल मैगजीन, भाग 6, अंक एक एंव दो में 2005 में प्रकाशित

(iv) के. राणा, ''पश्चिम बंगे प्राथमिक शिक्षाओं संगलिष्ठा किच्छु प्रसंग,'' अनीक, वर्ष 42 अंक दो, अगस्त 2005, कोलकता

(v) एस सांत्रा, टी बनर्जी, एम कुंडू, 'प्राथमिक शिक्षा बे सरकारी काम,' अनीक, वर्ष 42, अंक दो, अगस्त 2005, कोलकता

(vi) एस सांगा, टी बनर्जी, एम कुंडू और ए मुखर्जी के साथ के राणा, 'प्राथमिक शिक्षाए सरकारी बनाम बेसरकारी उद्योगः एकाटि तुलनामूलक समीक्षा;,

पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा समाचार (ए बी पी टी ए जर्नल) वर्ष 46 अंक दो, 2005

(vii) के राणा, 'प्रांत देश प्राथमिक शिक्षा' पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा समाचार (ए बी पी टी ए पत्रिका) शरद अंक यानी पूजा विशेषांक

(viii) एस सांत्रा टी बनर्जी और एम कुंडू, 'हताश समय के ठेलेः एकटि प्राथमिक विद्यालय देर बेरे 304 पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा समाचार (ए बी पी टी ए जो 1, 14,000 सदस्यता वाला पश्चिम बंगाल का सबसे बड़ा शिक्षक संगठन है, की पत्रिका) दिसंबर 2005

प्रतीची टीम कार्यक्रम सदस्यों ने हस्तक्षेप कर मीडिया में छपी दोपहर के भोजन कार्यक्रम संबंधी रिपोर्टो और लेखों में त्रुटियां दूर करवायीं। दोपहर के भोजन कार्यक्रम पर दो पत्र लिखे, जो आनंद बाजार पत्रिका में 22 दिसंबर, 2004 और 22 दिसंबर, 2005 में प्रकाशित हुए।

सेमिनार और कार्यशैलियों में टीम सदस्यों की भागीदारी

(i) कलकत्ता के संस्थान सेंटर दिसंबर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसज ने 23 दिसंबर, 2005 को अभिभावकों, शिक्षकों और अन्य लोगों की एक बैठक आयोजित की। शिक्षा की गुणवत्ता विषय पर आयोजित इस बैठक में कुमार राणा, जो वरिष्ठ शोध सहायक है, ने पैनल के रूप में भाग लिया।

(ii) सितंबर 2005 में विश्व भारतीय शांतिनिकेतन, में विश्वभारती के मैनेजमेंट के प्रथम वर्ष के छात्रों के सामने प्रतीची हेल्थ रिपोर्ट के कुछ निष्कर्ष पेश किये।

(iii) रिसर्च टीम के नेता, कुमार राणा ने शांतिनिकेतन में दूरदर्शन द्व ारा आयोजित एक शो में प्रतीची रिसर्च टीम का प्रतिनिधित्व किया। ये शो दिसंबर 2005 में पश्चिम बंगाल में स्वास्थ्य सेवओं संबंधी विषयों पर आयोजित किया गया था।

(iv) नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन द्व ारा 22–23 जनवरी 2005 में नई दिल्ली में आयोजित एक अखिल भारतीय बैठक में, पश्चिम बंगाल में दोपहर–भोजन कार्यक्रम के क्रियान्वयन पर रिसर्च टीम के निष्कर्षो को कुमार राणा ने पेश किया।

(v) 19 दिसंबर को सभी प्रतीची टीम सदस्यों ने बांकुस जिले की मानव विकास रिपोर्ट संबंधित एक बैठक में भाग लिया।

(v) प्राथमिक शिक्षा, जनस्वास्थ्य और विकास पर सार्वजनिक कार्यशाला

प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट अलग–अलग स्तर पर प्राथमिक शिक्षा, बुनियादी स्वास्थ्य और लिंग भेद पर विभिन्न रसर्च परियोजनाओं पर अपना ध्यान केंद्रित करता आया है। रिसर्च के अलावा संबंधित विषयों पर ट्रस्ट सार्वजनिक बहस और वाद–विवादों को प्रोत्साहन भी करता है। इसी सिललिले में रिसर्च टीम ने 'प्राथमिक शिक्षा, जन स्वास्थ्य और विकास' विषय पर एक तीन दिन की सार्वजनिक कार्यशाला आयोजित की। 2 से 4 अगस्त, 2005 में सृजनी, पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, शांतिनिकेतन और गीतांजलि, भोजपुरा में आयोजित इस कार्यशाला के सहप्रायोजक बीरभूम जिला प्राथमिक स्कूल परिषद् और बीरभूम परिषद थे। पश्चिम बंगाल के विभिन्न हिस्सों से आये करीब 300 लोगों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। भाग लेने वालों में शिक्षक, अभिभावक, ग्रामीण और इलाके के लोग तो थे ही, साथ ही प्राथमिक शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग से जुड़े सरकारी महकमों के अधिकारी, कुछ जिला प्राथमिक स्कूल परिषदों के चेयरमैन, कुछ जिला परिषदों के सभापति, और पश्चिम बंगाल मंत्रिमंडल के तीन मंत्री– डॉ. असीम दास गुप्ता, डॉ. सूर्यकांत मिश्र और श्री कांतिविश्वास थे।

(अ) पहले दिन की चर्चा का मुख्य विषय रहा–प्राथमिक शिक्षा के सुधार में जनभागीदारी की भूमिका। कार्यशाला के उद्घाटन के मौके पर महुआ प्राथमिक विद्यालय के छात्रों ने एक आकर्षण रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया। अपने उद्घाटन भाषण में बीरभूम प्राथमिक स्कूल परिषद के चेयरमैन गौतम घोष ने शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए एक ठोस नीति बनाने की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि दोपहर–भोजन कार्यक्रम लागू होने के बाद स्कूलों में हाजिरी और दाखिले दोनों बढ़े हैं। और ये कार्यक्रम स्कूलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने ये भी कहा कि स्कली परिवेश में बच्चों को अपनी पहचान खुद ढूंढनी और बनाती होगी।

सार्थक चर्चा और सक्रिय भागीदारी मुक्त समारोह

अन्य सामान्य सेमिनारों के विर्परीत, प्रतीची की कोशिश हमेशा यही रही है कि भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो और सभी को अपनी–अपनी बात रखने का अवसर मिले। इस समारोह में सभी को अपने विचार और सुझाव रखने और अपनी शंकाएं दूर करने का अवसर मिला। अपना–अपना पक्ष रखने के बाद, बारी ग्रुप वाद–विवाद रिपोर्ट और चर्चा था। ये सभी सेमिनार को निष्कर्षो पर पहुंचाने में काफी सहायक सिद्ध हुए। सेमिनार के अंत में दो प्रस्ताव पारित किये गये, जिनमें शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न विषयों पर सरकार से ज्यादा ध्यान देने का अनुरोध किया गया।

पहले दौर की अध्यक्षता, हावड़ा जिला प्राथमिक स्कूल परिषद के चेयरमैन स्मृतीश बंदोपाध्याय ने की। पहले दौर में शिक्षकों और अभिभावकों की भागीदारी ज्यादा रही, जिन्होंने न केवल समस्याएं उठायी, बल्कि कई सुझाव भी दिये। दूसरे दौर में विभिन्न जिला प्राथमिक स्कूलों के चेयरमैन, विभिन्न शिक्षक यूनियनों के प्रतिनिधियों और अन्य लोगों ने प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विषयों और

प्राथमिक शिक्ष में जनभागीदारी की भूमिका पर चर्चा की। पश्चिमी मेदिननिपुर जिला प्राथमिक स्कूल परिषद के चेयरमैन ब्रजगोपाल परिया ने इस दौर की अध्यक्षता की। प्रतीची रिसर्च टीम ने वरिष्ठ शोध सहायक कुमार राणा ने दोनों दोर के बातों का निचोड़ पेश किया और चर्चा की अपील की। दोपहर के भोजन के बाद समूह–चर्चा का दौर रखा गया, जिसमें सभी भागीदारों को दस–दस के समूह में बांट दिया गया। हर समूह का एक–एक अध्यक्ष था। अंत में पूरे दिन की चर्चाओं के बाद जो बाते सामने आयी वे हैः–

- प्राथमिक शिक्षा से जुड़े सभी लोगों का मानना था कि दोपहर–भोजन कार्यक्रम के क्रियान्यवयन के बाद स्कूलों में दाखिले और हाजिरी दोनों में काफी बढ़ोतरी हुई है।
- दोपहर– भोजन कार्यक्र के क्रियान्यवयन में में ज्यादा पारदर्शिता होनी चाहिए और लालफीताशाही के कारण हो रही दिक्कतों को दूर किया जाना चाहिए।
- प्राथमिक शिक्षा को सर्वव्यापी बनाने के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सक्रिय जनभागीदारी की जरूरत को आवश्यक माना गया। गांवों की शिक्षा कमेटिया निश्चित स्कूलों से नहीं जुड़ी है, और कई जगह काम ही नहीं कर रही हैं। ऐसे में स्कूल प्रबंधन में अभिभावकों की भागीदारी की संभावना सीमित हो जाती है।
- शिशु शिक्षण केंद्रों की ढाचागत समस्याओं, और यहां की सहायिकाओं को मिलने वाले वेतन में अनियमितताओं की बात भी उठायी गयी।
- कई भागीदारी ने शिक्षक–छात्र अनुपात में कमी की ओर इंगित किया। कहा–शिक्षक छात्रों के संख्या के अनुरूप होने चालिए।
- पाठ्य पुस्तकों के वितरण की समस्या भी गंभीरता को भी उठाया गया।
- बाहरी आंकलन के लिए प्रश्न–पत्रों की तैयारी में शिक्षकों की भूमिका होनी चाहिए। मौजूदा प्रक्रिया में इस महत्वपूर्ण काम में शिक्षक शामिल नहीं किये जाते–नतीजतन बाहरी आंकलन का तरिका ज्यादा अफसरी हो जाता है।
- एक निष्कर्ष ये निकला कि प्राथमिक स्तर परे ज्यादातर समस्याओं से आसानी से निपटा जा सकता है, बशर्ते आई सी डी एस केंद्र प्राथमिक स्तर से पहले दी जाने वाली शिक्ष में अपनी जिम्मेदारी सही ढंग से निभा सकें।

उपरोक्त चर्चा के बाद निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया :

<u>प्राथमिक शिक्षा संबंधी प्रस्ताव</u>

1) 2002 और 2004 में आयोजित कार्यशालाओं के कई प्रस्ताव नीति–निर्धारण में सहायक माने गये। मौजूदा सेमिनार ने प्राथमिक स्कूलों में दोपहर–भोजन कार्यक्रम लागू करने, स्कूलों में मां–शिक्षक कमेटी बनाने जैसे अन्य

सुझावों को मानने के लिए पश्चिम बंगाल सरकार को धन्यवाद दिया। दोपहर–भोजन कार्यक्रम में सहयोग के लिए पश्चिम बंगाल की जनता का भी धन्यवाद किया गया।

2) ये जरूरी है कि दोपहर–भोजन कार्यक्रम के क्रियान्वयन में आ रही दिक्कतों को दूर करने के लिए सरकारी प्रयासों में सक्रिय जनभागीदारी सुनिश्चित की जाये।

3) ये स्पष्ट है कि दोपहर–भोजन कार्यक्रम शुरू होने के बाद प्राथमिक स्कलों में दाखिलों के साथ–साथ हाजिरी भी बढ़ी है। प्राथमिक स्कूली शिक्षा के प्रबंधन में आम आदमी को सहयोग करने की इच्छा भी चर्चा में सामने आयी है। और अब सरकार को चाहिए कि वो और प्राथमिक शिक्ष तंत्र से जुड़े अन्य सभी पश्चिम बंगाल में शिक्षा क्षेत्र में आये इस महत्वपूर्ण बदलाव का लाभ उठाये।

4) प्रत्येक स्कूल में निर्वाचित शिक्षक–अभिभावक कमेटी जिसमें सभी वर्गो, जातियों और समुदाय के प्रतिनिधि रहे, उन्हें कानूनी अधिकार प्रदान कर बुनियादी काम है।

प्राथमिक स्तर से पहले दी जाने वाली शिक्षा के लिए आई सी.डी.एस कार्यक्रम को मजबूत करना, प्राथमिक स्कूलों और शिशु शिक्षा केंद्रों में पाठ्य–पुस्तकों की उपलब्धता और समय पर सप्लाई सुनिश्चित करना, बाहरी आंकलन के लिए प्रश्न–पत्रों की तैयारी में प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों की भागीदारी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। कार्यशाला ने प्राथमिक शिक्षा को सर्वव्यापी बनाने के लिए शिक्ष आधारित आंदोलन चलाने की अपील पूरे समाज से की।

जनस्वास्थ्य सेवा तंत्र की मजबूतीः दूसरे दिन के कार्यक्रम

दूसरे दिन यानी 3 अगस्त को चर्चा का विषय था–जनस्वास्थ्य सेवा तंत्र की मजबूती। दूसरे दिन कई नये लोगों ने भी शिरकत की। दूसरे दिन का कार्यक्रम शुरू हुआ। सुकुमार रॉय के नाटक 'अवाक जलपान' से, जिसका मंचन किया मुलुक ट्रस्ट के शोधा सहायक शुभ्रांशु सांत्रा ने प्रतीची हेल्थ रिपोर्ट के कुछ अंश रख, चर्चा की शुरूआत की। ये रिपोर्ट झारखंड के दुमका जिले और पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले का तुलनात्मक अध्ययन था। बीरभूम जिले में, हालांकि दुमका जिले की तुलना में बेहतर जनस्वास्थ्य सेवा तंत्र के विभिन्न पहलुओं के मद्देनज़र, आपेक्षित स्तर से काफी कम था। भोला–छाप नीम–हकीमों पर निर्भरता अब भी ज्यादा है, और घटिया जनस्वास्थ्य तंत्र के कारण निजी स्वास्थ्य सेवा तंत्र अपने शोषक प्रकृतियों को बढ़ाते जा रहा है। ये भी रेखांकित किया गया कि जनस्वास्थ्य सेवाओं को बेहतरी के लिए जनभागीदारी आवश्यक है। ये प्रतीची हेल्थ रिपोर्ट का एक मुख्य निष्कर्ष था।

दूसरे दिन के पहले सत्र की अध्यक्षता दक्षिण दिनाजपुर जिला परिषद के सभापति महीउद्दीन अहमद ने की। इसमें शिक्षक–अभिभावकों ने ज्यादातर भाग लिया। लेकिन कुछ ग्रामीणों ने भी अपनी बात रखी। दूसरे सत्र की अध्यक्षता उत्तर

24 परगना जिला परिषद के सभापति अपर्णा गुप्ता ने की। इस सत्र में विभिन्न खंडों के मुख्य चिकित्सा अधिकारी, उपकेंद्रों के स्वास्थ्य सेवकों और कई गैरसरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने अपनी बात रखी। दोपहर–भोजन बाद के सत्र में कुछ जिला परिषदों के स्वास्थ्य कर्मदक्षयाओं और सभापतियों विभिन्न स्वास्थ्य कार्यक्रम से जुड़े अपने अनुभव रखे। हुगली जिले के समपर्ति कृष्ण बंदोपाध्याय ने इस सत्र की अध्यक्षता की। राज्य के महिला आयोग की अध्यक्ष जशोधरा बागची ने महिला के मानसिक स्वास्थ्य पर महिला संबंधी अन्य विषयों पर अपनी बात कही। दिन भर की चर्चा के बाद जो निष्कर्ष सामने आये, वे थेः–

- बेहतर जनस्वाथ्य सेवाएं, विकास का एक सूचक हैं और जनता की एक ऐसी मांग है, जो लंबे समय से पूरी नहीं है।
- जनता में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ रही है और नागरिक अब जनस्वास्थ्य सेवाओं में ज्यादा रूचि ले रहे है।
- सर्बिक स्वास्थ्य विधान कर्मसुचि जैसे भागीदारी कार्यक्रमों और अन्य कार्यक्रमों में

बाधक समस्याएं उठायी गयी।

- वक्ताओं ने बुनियादी स्तर पर जनस्वास्थ्य सेवाओं को प्रभावी बनाने में आ रही दिक्कतों को जोर–शोर से उठाया। वक्ताओं ने दुख जताया कि जनस्वास्थ्य सेवा तंत्र के अप्रभावी होने के कारण आम आदमी निजी स्वास्थ्य सेवाओं पर निर्भर होना पड़ रहा है।

दिन भर की चर्चा के बाद निम्नलिलिखत प्रस्ताव पारित किया गयाः

<u>जनस्वास्थ्य प्रस्ताव</u>

1.सेमिनार में सम्मिलित सभी, जनस्वास्थ्य सेवा तंत्र को मजबूत करने के लिए जनभागीदारी समेत तमाम पहल के लिए सरकारी फैसलों का स्वागत करते हैं।

2.चर्चा में ये बात सामने आयी है कि बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं का अप्रभावी क्रियान्वयन का असर जनसाधारण के दैनिक जीवन के अन्य पहलुओं के अलावा शारीरिक, आर्थिक, उत्पादकता और शैक्षिक अवस्था पर भी पड़ा है। प्राथमिक स्तरपर और राष्ट्रीय खामियां है। प्राइमरी चिकित्सा केंद्र और इकाई स्तर पर उपकेंद्रो को और ज्यादा स्टाफ और ढांचागत सुविधाएं देकर और सक्षम बना इन खामियों को दूर किया जा सकता है। इस तंत्र को और जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए ताकि आदमी को जनस्वास्थ्य सेवाओं का पूरा लाभ मिल सके।

3. चर्चा के दौरान ये बात भी सामने आयी कि कमजोर और अप्रभावी जनस्वास्थ्य सेवा तंत्र प्राइवेट चिकित्सा तंत्र को बढ़ाकर देता है। जिसने न केवल आर्थिक शोषण होता है, बल्कि कई मामलों में जनस्वास्थ्य सेवा घातक भी सिद्ध

होती है। ये बात भी साबित हुई कि बेहतर और प्रभावी जनस्वास्थ्य सेवाएं, निजी और अन्य चिकित्सा तंत्र पर बेहतर और प्रभावी सुविधाएं देने के लिए दबाव का काम करती है। लिहाजा, जनस्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर व प्रभावी बनाने के लिए ईमानदार कोशिश की आवश्यकता है। साथ ही साथ, एक दम जमीनी स्तर तक स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सेवाओं संबंधी जानकारियां उपलब्ध करवाने की जरूरत भी है।

4. जनस्वास्थ्य सेवाएं सुचारू रूप से चलें, इसके लिए जन–निरीक्षण की एक व्यवस्था भी बनाई जानी चाहिए। साथ ही बुनियादी स्तर पर स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, और स्वास्थ्य सेवाओं के सही प्रभाव के लिए सक्रिय जन भागीदारी की गारंटी भी दी जानी चाहिए। बुनियादी स्तर पर एक स्वतंत्र और निर्वाचित कमेटी होनी चाहिए जो जनभागीदारी और जन–निरीक्षण सुनिश्चित कर सके।

जनस्वास्थ्य और प्राथमिक शिक्षा क्षेत्र में बेहतर सरकारी भागीदारी

सेमिनार के अंतिम दिन प्रोफेसर अमर्त्य सेन ने प्रतीची हेल्थ रिपोर्ट और उसका बंगला संस्करण का लोकार्पण किया। इस मौके पर पश्चिम बंगाल मंत्रिमंडल के कई मंत्री मौजूद थे, जिन्होंने ट्रस्ट द्वारा उठाये गये जन–स्वास्थ्य और प्राथमिक शिक्षा संबंधी मुद्दों पर पर अपनी चिंता तो व्यक्त की ही इन मुद्दों पर अपनी प्रतिबद्धता भी जाहिर की।

कार्यशाला में तीसरे दिन के कार्यक्रम की शुरूआत, प्रतीची ट्रस्ट की शोध सहायक भौमिता कुंडू के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें पिछले दो दिन हुई चर्चाओं का जिक्र था बीरभूम जिला प्राथमिक स्कूल परिषद के चेयरमैन गौतम घोष ने पारित प्रस्ताव पढ़े।

दोपहर–भोजन से पहले के सत्र में डी पी इ पी के राज्य परियोजना अधिकारी शांति विश्वास; ए बी पी टी ए सचिव प्रदीप विश्वास; बर्द्धमान जिला प्राथमिक स्कूल परिषद के चेयरमैन साहिदुल हक; कलकत्ता के संटर फॉर स्टीडज इन शोशल साइंसेज की मानवी मजूमदार; पश्चिम में दिनीपुर जिला प्राथमिक स्कूल परिषद के चेयरमैन, ब्रजगोपाल पारिया; एस एस डी ए में कार्यकारी निदेशक अशोक दास; बर्द्धमान के समाधिपति अपर्णा गुप्ता; हुगली के सभाधिपति कृष्ण बंदोपाध्याय, और बांकुरा की सभाधिपति पूर्णिमा बागड़ी ने शिरकत की। इन सभी ने प्राथमिक शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न पहलुओं पर बात की ओर अपने अनुभव की उपस्थिति लोगों से बांटे। वीरभूम के जिलाधीश खलिल अहमद ने खासकर सार्थक रिसर्च के क्षेत्र में प्रतीची ट्रस्ट की भूमिका का जिक्र किया। इस चर्चा में कई महत्वपूर्ण सुझाव भी सामने आये। प्रतीची ट्रस्ट के चेयरमैन प्रो. अमर्त्य सेन ने भी इस सत्र में भाग लिया।

दोपहर भोजन बाद के सत्र में प्रो. अमर्त्य सेन ने प्रतीची हेल्थ रिपोर्ट के अंग्रेजी और बंगला संस्करणों का औपचारीक रूप से लोकार्पण किया। अपने भाषण में प्रो. अमर्त्य सेन ने, गंभीर जनभागीदारी के जरिये प्राथमिक शिक्षा और बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं के प्रभावी क्रियान्वियन की दिशा में सरकारी सहयोग की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने हाल ही में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति पर प्रतीची रिसर्च टीम के कलकत्ता के सर्वेक्षण को भी रेखांकित किया।

इस सत्र में पश्चिम बंगाल मंत्रिमंडल के तीन मंत्रियों ने भी अपने विचार रखे। स्कूली शिक्षा मंत्रियों ने भी अपनी विचार रखे। स्कूली शिक्षा मंत्री कांति विश्वास ने दोपहर भोजन कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन और सर्वव्यापी प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति में माताओं की भागीदारी पर चर्चा की। स्वास्थ्य, पंचायत और ग्रामीण विकास मंत्री डॉ. सूरजकांत मिश्रा ने विभिन्न कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अलग–अलग विभागों के बीच तालमेल और विकेंद्रियकरण के महत्व पर जोर दिया। लिंग–भेद हटाने के प्रयासों की वकालत करते हुए उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवा की ओर पहला कदम शिक्षा को बढ़ाना है और दो क्षेत्रों का विकास साथ–साथ किया जाना चाहिए। कार्यशाला में भाग लेने का अवसर मिलने पर अपनी खुशी का इजहार करते हुए वित्तमंत्री डॉ. असीम दास गुप्ता ने स्वास्थ्य और प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र की समस्याओं को कम करने के लिए सकारात्मक सुझाव दिये। शिशु शिक्षा केंद्र की सहायिकाओं के वेतन क नियमित करने के लिए आवश्यक कदम उठाने का आश्वासन भी उन्होंने दिया। दोपहर के भोजन कार्यक्रम की बाबत उन्होंने सुझाव दिया हर स्कूल में एक किचन गार्डन होना चाहिए और आस–पास के तालाबों में मछली पकड़ने की सुविधा भी। इस दिशा में सरकार की ओर से आवश्यक आर्थिक और अन्य सहायता देने का वादा भी उन्होंने किया। वित्तमंत्री ने शिक्षकों से सभी किस्म के भेदभाव–खासकर जातिगत भेदभाव छोड़ने की अपील की। साथ ही, उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं को सब–सेंटर स्तर ले जाने की जरूरत पर भी जोर दिया।

कार्यशाला के पहले दो दिन में पारित प्रस्तावों का सभी वक्ताओं ने स्वागत किया। बीरभूम जिला परिषद के सभाधिपति मनसा हसदा के समापन भाषण के साथ तीन–दिवसीय कार्यशाला संपन्न हो गयी।

पश्चिम बंगाल में प्राथमिक शिक्षा में आंकलन व्यवस्था पर 22 नवंबर, 2005 को आयोजित कार्यशाला के आयोजन में सहयोगात्मक मदद देने का प्रस्ताव भी प्रतीची टीम ने रखा। इस कार्यशाला का आयोजन ऑल बंगाल प्राइमरी टीचर्स एसोसिएशन यानी ए वी पी टी ए, और बीरभूम जिला प्राथमिक स्कूल परिषद ने संयुक्त रूप से किया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य मौजूदा आंकलन प्रणाली कुछ खामियों–खासकर आंकलन के समय (आंकल की मौजूदा व्यवस्था अभी–शिक्षकों के पढ़ाने और बच्चों के ग्रहण करने की बीच भी खाई को सही तरह से पाटने के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध नहीं करवाती है।)–और, आंकलन के

तरीकों (मसलना, कई बार विशेषज्ञों द्वारा तैयार प्रश्न पत्र के सवाल , स्कूलों में की जा रही पढ़ाई के अनुरूप नहीं होते)– पर चर्चा करना था।

VII रिसर्च और–जनभागीदारी को बढ़ावाः रिसर्च टीम की अन्य गतिविधियां

रिसर्च टीम ने पश्चिम बंगाल के प्राथमिक शिक्ष महकमें से निरंतर संपर्कमें रह, दोपहर के भोजन कार्यक्रम के क्रियान्वयन में कई तरह से सहयोग दिया। ये सहयोग कायक्रम के असर को जांचने के लिए प्रश्नवली, कई प्राथमिक स्कूलों का अधिकारियों के साथ संयुक्त दौरा, और सही फीड बैक देना जैसे तरीकों के रूप में थी।

टीम ने शिक्षकों के संगठनों और प्राथमिक शिक्षा से जुड़े अन्य संगठनों के साथ भी सक्रिस संपर्क रखा। टीम ने इस संगठनों की मदद, सूचनाएं–आकड़े और फीड बैक उपलब्ध करवा कर दी। इस संपर्क का व्यापक लाभी प्रतीची टीम को भी काफी मिला।

रिसर्च टीम ने पश्चिम बंगाल में रिसर्च कर रहे अन्य गैर सरकारी संगठनों के अलावा रिसर्च के काम में लगे विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुछ छात्रों की मदद भी की। प्रतीची रिसर्च टीम ने पश्चिम बंगाल एडुकेशन नेटवर्क यानी डब्ल्यू इ बी इ एन को भी दिया। ये नेटवर्क, पश्चिम बंगाल में शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे तमाम गैरसरकारी संगठनों की संस्था है। नेटवर्क की मदद टीम ने प्रश्नवालियों का एक सेट बना, और आंकड़े जमा करने और उनके आंकलन के लिए प्रशिक्षणदे कर किया। ये काम पश्चिम बंगला में प्राथमिक शिक्षा की मौजूदा अवस्था जाने के लिए एक सर्वे के लिए किया गया। इस सर्वे को नेटवर्क ने अपने सहयोगी संगठनों के जरिये करवाया था।

VIII प्रतीची–अयो ऐदारी हेल्थ प्रोजेक्ट

प्रतीची रिसर्च टी का हॉर्मो जीवि भलाई पोंथा–नामक हेंल्थ प्रोजेक्ट से निरंतर संपर्क बना रहा। ये प्रतीची ट्रस्ट और अयो ऐदारी ट्रस्ट के संयुक्त सहयोग से शुरू किया गया था। अयो ऐदारी, झारखंड के दुमका जिले की संथाल महिलाओं का एक गैर सकरारी संगठन है। 28 जनवरी 2004 को दुमका जिले के गोपीकंदार खंड में कुंडादहाड़ी गांव चल रहे इस कार्यक्रम का काफी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला। ये गांव, दुमका और पकुर के बीच मुख्य सड़क, पर बस स्ऑप से 20 किलोमीटर और खंड मुख्यालय के प्राथमिक चिकित्सा केंद्र से 26 किलोमीटर की दूरी पर है। इस कार्यक्रम की मुख्य सफलताएं कुछ जन–चिकित्सा कार्यक्रमों मसलन टीकाकरण, मलेरिया विरोधी अभियान को दोबारा शुरू करने में रही। 2003 में इन गांव में टीकाकरण काप्रतिशत 25 से भी कम थी, दिसंबर 2005 में शत प्रतिशत हो गया। 2003 में गांव के कई लोग मलेरिया से मौत के

मुंह में चले गये, जबकि 2004 और 2005 में न केवल मलेरिया से एक मौत नहीं हुई, बल्कि मलेरिया के मामले में भी काफी कमी आयी।

इस प्रोजेक्ट ने सरकारी चिकित्सा तंत्र और स्थानीय जनता के बीच दूरी कम करने में अहम भूमिका निभाई है। ये प्रोजेक्ट स्थानीय आबादी में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फेलाने में भी काफी सहायक रहा। और इन दोनों कारणों यानी जन–चिकित्सा ने कई कार्यक्रमों की फिर से शुरूआत और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता ने स्थानीय आबादी की भोला–छाप नीम–हकीमों पर निर्भरता काफी कम कर दी।

स्वास्थ्य क्षेत्र में इस पहल के अलावा इस प्रोजेक्ट ने प्राथमिक स्कूलों में बच्चों का दाखिला बढ़ाने के लिए अभियान में एक महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई। 2003 में जहा इलाके के सिर्फ 60 प्रतिशत बच्चे ही प्राथमिक स्कूल जाने लायक इलाके का हर बच्चा आज स्कूल आ रहा है। ये कार्यक्रम न केवल बच्चों का दाखिला करवाने में सफल रहा, बल्कि स्कूलों में शिक्षकों और बच्चों की हाजिरी बढ़ाने में भी सफल रहा। इलाके में दोपहर भोजन कार्यक्रम के क्रियान्वयन में भी इस प्रोजेक्ट ने सक्रिय भूमिका निभायी।

1) अयो–ऐदारी प्रोजेक्ट के लक्ष्य निम्नलिखित थे।

(i) मलेरिया, डायरिया, कालाज्वर और अन्य आम बीमारियों के इलाज की सुविधा उपलब्ध करवाना

(ii) अन्य सामाजिक मुद्दे के अलावा, महिला और–शिशु स्वास्थ्य पर जागरूकता फेलाना

(iii) जन स्वास्थ्य चिकित्सा सेवाओं को सही तरह से चलाने के लिए प्रयास करना

(iv) सभी बच्चों का टीकाकरण, और सभी महिलाओं को परिवार नियोजन कार्यक्रम के तहत लाना

(v) सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्ष से जोड़ना, प्राथमिक स्कूल का सही काम–काज सुनिश्चित करना, और आस–पास के इलाके में दोपहर–भोजन कार्यक्रम को सही तरीके से लागू करवाना

(vi) हेल्थ कॉपरेटिव का गठन

(vii) शराब खोरी के खिलाफ अभियान

2) <u>गतिविधियां और उपलब्धियां</u>

अयो ऐदारी अभियान की शुरूआत कुंडापहाड़ी गांव में एक स्वास्थ्य चिकित्सा केंद्र की स्थापना से हुई थी। आज ये केंद्र न केवल मलेरिया, कालाज्वर डायरिया जैसी बड़ी बीमारियों बल्कि अन्य आय रोगों का उपचार उपलब्ध करवाने में सीधा काम कर रहा है। इसके अलावा ये केंद्र महिला और शिशु स्वास्थ्य के प्रति जन–जागरूकता फैलाना, साफ–सफाई, बच्चों की शिक्षा और शराबखोरी को

कम करने जैसे महत्वपूर्ण कामों में सक्रिय रहा। इस केंद्र को चलाने के लिए एक रजिस्टर्ड हेल्थ सहकारी समिति का गठन भी किया गया।

3) <u>इलाज सुविधाएं</u>

इलाके की आबादी को सही उपचार उपलब्ध करवाने में भी केंद्र कर भूमिका महत्वपूर्ण रही है। गोपीकंडर के प्राथमिक चिकित्सा केंद्र का एक डॉक्टर, हर हफ्ते अयो–ऐदारी केंद्र, कुंडा पहाड़ी गांव में आता है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता गांववालों को इलाज की सुविधा और दवाएं 24 घंटे उपलब्ध करवाते है।

4) <u>शिक्षा पर पहल</u>

प्राथमिक शिक्षा के मामले में केंद्र ने महत्वपूर्ण योगदान किया हैं ये योगदान इलाके के बच्चों और उनके अभिभावकों से नियमित संपर्क रख, एक ऐसी स्थिति लाये, जहां सभी–अभिभावक अपने बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के लिए स्कूल भेजने लगे। शुरूआत में शिक्षकों की हाजिरी भी कम रहा करती थी। आज इलाके के 6 और 14 साल के सभी बच्चे और शिक्षक नियमित रूप से स्कूल आ रहे हैं। शिक्षक–अभिभावकों की बैठक भी हर महीने नियमित रूप से होती है। दोपहर का तैयार भोजन कार्यक्रम सही तरह से चलता रहे, इसके लिए निगरानी भी रखी जाती है। दोपहर–भोजन कार्यक्रम शुरू होने के बाद बच्चों का दाखिला और स्कूलों में हाजिरी काफी बढ़ गयी है। बेहतर तरीके से शिक्षा प्रदान कर सकें, ये कोशिश भी स्कूलों में दीखने लगी है।

5) <u>शराबखोरी के खिलाफ</u>

शराब और नशे की अन्य वस्तुओं के बुरे प्रभाव के प्रति जागरूकता फेलाने में स्वास्थ्य कार्यकर्ता शुरू से ही संलग्न रहे। इन आदतों से समाज में उपहास की स्थिति तो बननी ही है, कर्ज के चंगुल में भी नशेड़ी फंस जाते है। इस दिशा में कुछ सफलता मिली हैः गांव के कई पुरूष, जिनकी संख्या ज्यादा तो नहीं, शराब से पल्ला झाड़ चुके है।

इसके अलावा स्वसहयोगी ग्रुपों की महिलाएं, पुरूषों में ये लत खत्म करने के लिए काफी गंभीर कोशिश कर रही है।

6) <u>झोलाछाप नीम–हकीमों की शामत!</u>

अयो–ऐदारी–प्रतीची ट्रस्ट के कुंडा पहाड़ी केंद्र की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है। झोलाछाप नीम–हकीमों पर धरती निर्भरता और, न केवल कुंडा पहाड़ी गांव बल्कि आस–पास के इलाकों को झोला छाप नीम–हकीम छोड़–छोड़ कर भाग रहे है। एक गांव वाले के शब्दों में – आज उपचार का खर्च पहले दिनों की तुलना में दस गुना घट गया है। गांव वालों का कहना है कि वे स्वास्थ्य सहकारी समिति पर धीरे–धीरे निर्भर होते जा रहे है– इसका कारण दवा और पेशेवर चिकित्सा– उपचार का कम खर्च है।

बीमारियों से बचाव और उनके इलाज के प्रति जागरूकता फेलाने पर भी स्वास्थ्य कार्यकर्ता बराबर जोर देते है। आम नागरिकों में बढ़ती जागरूकता कार्यकर्ताओं की गतिविधियों की सफलता का सीधा प्रभाव है। आज डायरिया के

मामले में आर एस के इस्तेमाल के महत्व को सभी गांववाले न केवल समझते है बल्कि डायरिया के मामलों में इसका इस्तेमाल भी करते है। घर बैठ बीमारी के ठीक होने का इंतजार या झोलाछाप नीम–हकीम के के पास जाने के बजाय गांववालों का चिकित्सा केंद्र आना भी आम बात होती जा रही है। बीमारियों से बचाव के तरीके– मसलन मच्छरदानी, पीने को साफ उबला पानी, आस–पास की नियमित सफाई जैसे तरीकों को गांव वालों ने व्यापक स्तर पर अपना लिया है। एक दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि है कि आज गांव के लगभग हर घर में अपना किचन गार्डन है, जहां सब्जियां उगाई जाती है। स्वास्थ्य रहने के लिए गांववालों की खुराक में सब्जियों की मात्रा काफी हद तक बढ़ गयी है।

IX प्रतीची भवन

प्रतीची ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में नियमित शोध करना है। इसलिए ट्रस्ट का इरादा इस शिक्षा में नियमित रूप से रिसर्च और शोध करना है। जहां सर्वव्यापी प्राथमिक शिक्ष आज भी एक सपना ही है, वहीं देश में प्राथमिक शिक्षा संस्थानों और उसके मौजूदा ढांचे में काफी खामियां देखी जा सकती है। बच्चों का स्कूल आना बंद कर देना, अपर्याप्त सकरारी सहयोग, शिक्षकों और उनके आकाओं का ढीलापन और शिक्षा के स्तर में निरंतर गिरावट कुछ ऐसी ही खामियां है। इन खामियों के लिए जिम्मेदारी तथा करना ही नहीं, बल्कि इनको दूर करने के उपाय ढूंढने की भी जरूरत है। इसी मकसद से प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट ने प्रतीची भवन की रूपरेखा तैयार की है। प्रतीची भवनी शिक्षा क्षेत्र में एक प्रमुख शोध संस्थान का काम करेगा। ट्रस्ट का मानना है कि ये संस्थान स्कूली शिक्षा को और प्रभावी बनाने और उसे जनता की जरूरतों के मुताबिक ढालने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा– और ये कहने की आवश्यकता नहीं कि इस संस्थान का चरित्र भी अखिल भारतीय होगा।

ट्रस्ट ने कोलकता में सॉल्ट लेक इलाके में एक उपयुक्त जमीन का टुकड़ापश्चिम बंगाल सरकार से लीज़ पर लिया है। ये जमीन इस्टीट्यूशन क्षेत्र में है, और कई शिक्षण संस्थानों और पुस्तकालयों के करीब भी। लिहाजा ये सुनियोजित शोध के लिए सबसे उपयुक्त जगह है। फिलहाल, इस जमीन पर एक ऐसा ढांचा बनाने की दिशा में बुनियादी काम चल रहा है, जहां बैठकर विद्धान और रिसर्च सहायक आदर्श माहौल में अपना काम कर सकें।

X विशेष परियोजनाएं

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में शोध के अलावा, प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट का एक महत्वपूर्ण काम है विभिन्न मानवीय और धर्मार्थ कार्यों में सक्रियता। ट्रस्ट, खासकर प्राकृतिक आपदा से प्रभावित लोगों के पुर्नवास में सहयोग करता है।

1) प्रतीची उड़ीसा प्रोजेक्ट

1999 के सुपर साइक्लोन यानी चक्रवाती तूफ़ान से तबाह ओड़िसा के इरसामा में प्रतीची ट्रस्ट की गतिविधियां इस साल भी चलती रहीं। इस चक्रवाती तूफ़ान के पहले भी इरसामा खंड में बुनियादी शिक्षा और स्वास्थ्य व चिकित्सा सेवा, दोनों उपेक्षा का शिकार थे। पुर्नवास के दौरान भी, कुछ ही संगठनों ने शिक्ष के विकास पर काम शुरू किया, और इन संगठनों क गतिविधियां भी लघु मालिक और लक्ष्य प्रेरित रही। गत वर्ष जिला साक्षरता समिति (यानी अलाका साक्षरता समिति, जगतसिंहपुर) ने सर्वे करवाया, जिसमें पाया गया कि जगतसिंहपुर जिले के आठ खंडो में इरसामा खंड में, 15 से 35 आयु वर्ग में सबसे ज्यादा अनपढ़ व्यक्ति थे। सर्वे में दूर–दराज के गांवों में प्राथमिक शिक्षा के मामले में एक बड़ी बात और सामने आयी कि ज्यादातर छात्र अपना नाम सरकारी प्राथमिक स्कूलों में दर्ज होने के बाद भी, कक्षा चार से पहले स्कूल जाना शुरू ही नहीं करते। दरअसल, वे अपनी शिक्षा के लिए प्राइवेट ट्यूशन का सहारा लेते है। इसी सेपता चलता है कि इरसामा खंड में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति और स्तर क्या है।

इरसामा खंड में प्रतीची की विकास गतिविधियां बुनियादी शिक्षा और स्वास्थ्य पर केंद्रित हैं। प्रतीची प्राथमिक स्कूल, अंबिकी पंचायत के नागरी (किआदा) गांव में स्थित है, आज 115 छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहा है। इलाके में दूर दराज के पंचायती इलाकों में प्रतीची ट्रस्ट आंख, दांत, खून की कमी, सामान्य स्वास्थ्य जांच के लिए शिविर लगाने के अलावा एड्स/एच आई वी, प्रजनन और शिशु स्वास्थ्य, साफ–सफाई के महत्व, जल जनित और अन्य आम बीमारियों के प्रति जागरूकता लाने के लिए स्वास्थ्य चेतना बैठकों का आयोजन कर रहा है। प्रतीची ट्रस्ट ने प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में भी सक्रिय रहा। आज 75 साक्षरता केंद्रों के जरिये करीब 750 अनपढ़ लोग लाभ उठा रहे है। इन साक्षरता केंद्रों में महिलाओं और लड़कियों को खास तवज्जों दी जाती है। इन सबके अलावा प्रतीची ट्रस्ट ने दूर–दराज फैले सात समुदायों में सार्वजनिक पुस्तकालय कार्यक्रम भी शुरू किया है।

(i) प्रतीची स्कूलः ताजा स्थिति

प्रतीची स्कूल, जिसकी स्थापना प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट ने 6 फरवरी 2003 को भी की थी, नागरी के एक समुदायिक भावन में चल रहा है। नागरी इरसामा ब्लॉक के अंबिकी ग्राम पंचायत के तहत एक छोटी–सी बस्ती है। प्रतीची स्कूल का उद्देश्य ग्रामीण इलाके के गरीब और विपन्न लोगों को अच्छे स्तर की प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाया है।

प्रतीची स्कूल में आज पांच कक्षाओं में 115 बच्चे पढ़ रहे हैं। इनमें तीन कक्षा पूर्व–प्राइमरी और दो प्राइमरी कक्षाएं हैं। ये सभी बच्चे तीन ग्राम पंचायतों–अंबिकी, जिरैलो और जापा पंचायत में हैं।

(ii) शिक्षक

पांच कक्षाओं के लिए प्रतीची स्कूल में पांच शिक्षक है। पांच शिक्षकों के चार के पास पढ़ाने का पूर्व अनुभव है। प्रतीची स्कूल में छात्र–शिक्षक अनुपात 23:1 का है। इन शिक्षकों ने दो दौर में 14 दिन तक चले ट्रस्ट के एक कार्यक्रम में शिक्षण के सही गुण सीखे।

(iii) नियमित कक्षाएं

प्रतीची स्कूल में नियमित कक्षाएं एक महत्वपूर्ण बात है। शिक्षक अपनी जिम्मेदारियां नियमित रूप से पूरी करते है और हर स्तर के लिए अलग–अलग कक्षाएं लगाती है। दूर–दराज के इलाके में होने के कारण इस गांव में नियमित निगारानी संभव नहीं होती है। सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की गैर हाजिरी, शिक्षकों की कमी शिक्षण कार्यक्रम का सही क्रियान्वयन न होना जैसी दिक्कते, प्रतीची स्कूल में नहीं पायी जा सकती है।

प्रतीची स्कूल में कुल 5034 कक्षाएं लगीं। विषवार इनमें भाषा संबंधी कक्षाओं की संख्या 2447, गणित कक्षाएं 998, विज्ञान की कक्षाएं (अपर के जी से कक्षा दो तक) 276, शारीरिक शिक्षा की 427 और सोशल की 886 कक्षाएं लगी।

(iv) छात्र केंद्रित शिक्षण प्रक्रिया: प्रतीची स्कूल में पढ़ाने का तरीका

सरकारी स्कूलों में पढ़ाने का तरीका किताब और शिक्षक केंद्रित होता है, जिसके फलस्वरूप ये बच्चों को आर्कषण नहीं लगाया। प्राइमरी स्कूलों में बच्चों का आना बंद होने के पीछे ये एक बड़ा कारण हो सकता है। सर्वशिक्षा अभियान योजना, जिसमें छात्र–केंद्रित शिक्षण पर जोर और शिक्षण में उपयोग वस्तुओं के लिए धन भी उपलब्ध करवाया जाता है, के लागू होने के बाद भी इलाके के सरकारी स्कूलों में शिक्षण–प्रक्रिया में सुधार नहीं आ पाया है–ये ज्यादातर शिक्षकों और अधिकारियों की उदासीनता के चलते है।

प्रतीची स्कूल में छात्र पढ़ाने–सिखाने की शिक्षण प्रक्रिया छात्रों के लिए ज्यादा मनोरंजक और लुभाविनी है क्योंकि ये केंद्रित और गतिविधियों पर आधारित हैं। प्रतीची स्कूल में शिक्षण प्रक्रिया के प्रमुख बिंदु हैं:

- पढ़ाने–सिखाने के लिए खुशनुमा तरीका और विभिन्न विषयों के लिए शिक्षण में उपयोग क्षेत्रीय वस्तुओं का प्रयोग।
- बच्चों में जिज्ञासा और उनकी सृजन क्षमता के विकास के लिए शिक्षण के बंधे–बंधाए तरीके का अभाव
- पर्यावरण, साफ–सफाई और मूल्यों की शिक्षा छोटी–छोटी कहानियों, गीत और भूमिका के जरिये।

• छात्रों को खुद कर सीखने, और कक्षाओं में गतिविधियों के जरिये शिक्षा देना।

(v) छात्रों में न्यूनतम शिक्षा स्तरः एक उपलब्धि

अगली कक्षा में उत्तीर्ण किये जाने से पहले हमारे 90 प्रतिशत छात्रों का कक्षा में मौजूदा न्यूनतम शिक्षा का स्तर हासिल करना जरूरी है और ये नियमित कक्षाएं, पढ़ाई और शिक्षकों की लगन से संभव हुआ है।

(vi) अन्य स्कूली गतिविधियां

कक्षाओं में पठन–पाठन के अलावा, प्रतीची स्कूल में शारीरिक शिक्ष, कला और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसी अन्य गतिविधियों में भाग लेने के लिए भी बच्चों को प्रेरित किया जाता है। सालाना खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रतीची स्कूल में 7 फरवरी 2006 को किया गया। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, बाल दिवस और शिक्षक दिवस पर भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किये और गणतंत्र दिवस पर प्रतीची स्कूल के छात्रों ने तख्तियां–बैनर लेकर पड़ोस के एक गांव एक साक्षरता रैली का आयोजन किया।

(vii) प्रतीची स्कूल पुस्तकालय

गरीब बच्चों, जो पाठ्य पुस्तके खरीदने में असमर्थ है, उन बच्चों की मदद के लिए प्रतीची स्कूल के सहयोग से स्कूल में एक पुस्तकालय खोला गया है। प्रतीची स्कूल पुस्तकालय में तीन खंड हैं–

- बच्चों के लिए पाठ्य पुस्तकें खंड
- छात्रों के लिए पत्र– पत्रिका खंड
- शिक्षकों के लिए संदर्भ–खंड

(viii) प्रतीची स्कूल में दोपहर–भोजन कार्यक्रम

ज्यादातर बच्चे गरीब परिवेश से आते हैं। ये बच्चे भूखे न रहे, इसलिए प्रतीची स्कूल इनके लिए अपनी ओर से दोपहर का भोजन दिया जाता है। रोजाना 90 छात्र–छात्राओं के लिए भोजन तैयार किया जाता है और हर छात्र को पर्याप्त पौष्टिक भोजन दिया जाता है। जहां दोपहर–भोजन के सरकारी कार्यक्रम के तरह हर बच्चे को प्रत्ये भोजन में 27 ग्राम दाल दी जाती है, वहीं प्रतीची स्कूल में 40 ग्राम दाल के साथ–साथ 150 ग्राम सब्जियां भी दी जाती है हफ्ते में दो बार अंडे भीदिये जाते है।

(ix) अभिभावकों की भागीदारी

स्कूल की गतिविधियों और अन्य कार्यक्रमों में अभिभावकों की भागीदारी और सहयोग को प्रतीची स्कूल काफी महत्वपूर्ण मानता है। 8 सितंर 2005 को अभिभावक–शिक्षकों की बैठक में एक स्कूल कमेटी का गठन किया गया था। दस सदस्यों वाली इस स्कूल कमेटी का गठन बैठक में निर्वाचन के जरिये से किया गया। साल भर के दौरान प्रतीची स्कूल में शिक्षक–अभिभावकों की छह बैठकें हुई।

इन बैठकों में स्कूल के काम–काज की समीक्षा आमतौर पर और खासतौर पर प्रत्येक बच्चे, यूनीफॉर्म पाठ्य पुस्तकों की खरीद, साफ–सफाई और स्वच्छता, फीस संग्रह, साइकिल–रिक्शा की देखरेख और मिट्टी भरने के लिए श्रमदान पर जैसे मुद्दों पर चर्चा की गयी।

(B) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

इरसामा खंड के दूरदराज के गांवों में सरकारी स्कूलों के अभाव में, गांव वाले स्वयं अपना स्कूल चलाते है। ये स्कूल सामुदायिक स्कूल के रूप में जाने जाते है। इन स्कूलों के ज्यादातर शिक्षकों में लगन और गंभीरता तो है, लेकिन वे प्रशिक्षित नहीं हैं। इन स्कूलों न तो सरकार से सहयोग मिलता है, और न हीं किसी अन्य एजेंसी से। इन प्राइमरी स्कूल शिक्षकों के लिए प्रतीची स्कूल ने 15 से 24 अप्रैल 2005 को प्रतीची स्कूल में ही प्रतीची ट्रस्ट ने एकदस–दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पढ़ाने का तरीका, बाल मानसिकता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को शामिल किया गया, जिनका ज्ञान शिक्षकों को होना आवश्यक है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने शिक्षकों के लिए काफी उपयोगी रहा। आस–पास के गांवों में चल रहे सरकारी स्कूलों के कई शिक्षकों ने भी इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। और – ये अच्छा भी लगा कि 15–15 किलोमीटर दूर से शिक्षक इस कार्यक्रम में भाग लेने पहुंचे।

ये प्रशिक्षण कार्यक्रम मुख्यतः सामुदायिक स्कूलों और निजी स्कूलों के अप्रशिक्षित शिक्षकों के अलावा उन जिज्ञासु शिक्षकों के लिए लक्षित का जो अपने–अपने स्कूलों में खुशनुमा माहौल में पढ़ाई, छात्र केंद्रित शिक्ष और गतिविधि आधारित तरीके सीखना चाहते थे। दिलचस्पी की बात ये थी कि सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने भी इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी भाग लिया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण लेने आये कुछ 55 शिक्षकों में 11 सरकारी स्कूलों से थे।

(i) कार्यक्रम का उद्घाटन

दस–दिवसीय प्रशिक्षक कार्यक्रम का उद्घाटन इरसामा ब्लॉक के बाल विकास कार्यक्रम के अधिकारी श्रीमती सरला देवी ने 15 अप्रैल, 2005 को किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने दूर–दराज के गांवों के स्कूलों के लिए इस तरह के कार्यक्रमों की उपलब्धता पर खुशी जतायी।

(ii) भागीदार

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पांच अनुभवी विशेषज्ञों ने भाग लिया। ये थे–श्री टूटू दास और श्री रजत गोच्चायत, जो जिला रिसोर्स ग्रुप के शिक्षक प्रशिक्षक थे, राज्य के अंग्रेजी पाठ्य पुस्तकों के लेखक बोर्ड के संयोजक श्री बैद्यनाथ राउत और अनुभवी शिक्षक श्री बर्द्धमान स्वैन थे।

55 शिक्षकों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया, जिनमें चार प्रतची स्कूल से, सामुदायिक स्कूलों के चालीस और ग्यारह शिक्षक सरकारी

स्कूलों से थे। इनमें से 40 शिक्षकों के पास पहले किसी तरह का प्रशिक्षण नहीं था।

(iii) प्रशिक्षण के मुद्दे

प्रशिक्षण का तरीका भागीदारी पर आधारित था। इनमें बच्चों को पढ़ाने–सिखाने के विभिन्न तरीकों पर प्रैक्टिकल सत्रों के जरिये शिक्षकों को रू ब रू करवाया गया। मुख्य मुद्दे थेः

- बच्चों की प्रकृति, उनकी सोच और कल्पनाशीलता
- कक्षाओं में पढ़ाने–सिखाने में स्कूल पूर्व अनुभव और कल्पनाशीलता का इस्तेमाल
- शिक्षा ऐसी जो बच्चों का समुचित विकास कर सके
- स्कूल में पठन–पाठन का माहौल बनाने में शिक्षको की भूमिका
- चीजों के जरिये पठन–पाठन और स्थानीय रूप से उपलब्ध चीजों का उपभोग
- छात्र आधारित शिक्षा और इसमें शिक्षक की भूमिका
- अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, सामाजिक शास्त्र और अन्य विषयों की पढ़ाई गतिविधि पर आधारित तरीके से

प्रतीची शिक्षा रिपोर्ट के निष्कर्ष, प्रतीची स्कूल चलाने का हमारा अनुभव और दोपहर के भोजन कार्यक्रम के प्रबंधन पर भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में चर्चा हुई।

(C) प्रतीची के स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम

प्रतीची ने 2005–2006 के दौरान अंबिकी जापा और पद्मपुर पंचायत क्षेत्र में 19 स्वास्थ्य शिविर और 4 स्वास्थ्य जागरूकता कार्यशालाओं का आयोजन किया। स्वास्थ्य शिविर अनुभवी और विशेषज्ञ डॉक्टरों की मदद से लगाये गये, उनमें मुफ्त चिकित्सा जांच, त्वचा, दंत और शिशुओं में मुफ्त चेकअप किये गये। स्वास्थ्य जागरूकता कार्यशालाओं में एच आई वी/ एड्स, प्रजनन और शिशु स्वास्थ्य, साफ–सफाई और जल–जनित बीमारियों जैसे विषयों पर ज्यादा ध्यान दिया गया। गांव स्तर पर आयोजित इन कार्यशलाओं में महिलाओं और लड़कियों में खासतौर पर केंद्रित किया गया था। इन स्वास्थ्य शिविरों और कार्यशालाओं के लिए प्रतीची ने वहां काम कर रहे विभिन्न संगठनों के सहयोग के अलावा, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के डॉक्टरों और स्थानीय कार्यकर्ताओं के सहयोग भी लिया। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के डॉक्टरों की मदद से प्रतीची ने एक दंत–जांच शिविर और दो शिविर एनीमिया यानी स्कूल की कमी जांचने के लिए लगाये। लूथेरन वर्ल्ड सर्विसेज की सहयोग से एच आई वी/ एड्स पर जागरूकता के लिए कैंप का आयोजन किया गया।

(i) स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम

ज्यादातर बच्चे चूंकि गरीब और पिछड़े परिवारों से आते हैं, इसलिए उन्हें बुनियादी चिकित्सा सुविधाएं उनके मां–बाप और अभिभावक उपलब्ध नहीं करवा पाते है। इसलिए प्रतीची ने प्रतीची स्कूल में मासिक चिकित्सा जांच शिविर लगाये। गत वर्ष प्रतीची स्कूल में नौ ऐसे शिविर लगाये गये।

(ii) दंत–चिकित्सा शिविर

27 मई, 2005 को अंबिकी पंचायत क्षेत्र के पटेन गांव में प्रतीची ने एक दंत–चिकित्सा शिविर, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के सहयोग से लगाया। इस शिविर में 178 लोगों की चिकित्सा जांच और उपचार किया गया।

(iii) एनीमिया मुक्ति अभियान

अंबिकी और जापा ग्राम पंचायतों में प्रतीची ने एनीमिया जांच और उपचार के लिए 1 अक्तूबर और 29 नवंबर को दो शिविर लगाये। इन शिविरों में महिलाओं और बच्चों का हेमियोग्लोबिन टेस्ट किया गया। जिन लोगों में खून की कमी पायी गयी। उन्हें आइरन और फॉलिक गोलियां दी गयीं।

आयोजित स्वास्थ्य शिविरों का विवरण

1. जापा पंचायत के कोच्छिला गांव में 3 अप्रैल, 2005 को आम चिकित्सा जांच शिविर। कुल 125 लोग लाभान्वित

2. पदमपुर पंचायत में गांव संखा में 19 मई को आय चिकित्सा जांच शिविर कुल लाभान्वित व्यक्ति– 50।

3. इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के सहयोग से अंबिकी पंचायत के पटेना गांव के स्कूल में 27 मई 2005 को दंत–चिकित्सा शिविर। कुल 178 लोगों को फायदा

4. महुआ में 26 जुलाई को आम चिकित्सा जांच शिविर। कुल 52 लोग लाभान्वित।

5. पटेना में 28 मई, 2005 को आम चिकित्सा जांच शिविर। लाभान्वित लोगों की संख्या 45।

6. कोच्छिला में 17 सितंर, 2005 को आम चिकित्सा जांच शिविर। कुल 40 लोग लाभान्वित।

7. इंडियन मेडिकल एसोसिएशन आई एम ए के सहयोग से एनीमिया जांच एंव उपचार शिविर 1 अक्तूबर को पटेना गांव में। कुल 207 लोगों को फायदा।

8. जापा के बरतोल प्राथमिक स्कूल में 27 अक्तूबर को आम चिकित्सा जांच शिविर। कुल 200 लोग लाभान्वित।

9. आई एम ए के डॉक्टरों के सहयोग से बरतोल स्कूल में 29 नवंबर को एनीमिया जांच एंव उपचार शिविर। कुल 184 लोगों को फायदा।

कुल 1124 लोगों का चिकित्सीय उपचार और लाभ।

स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम

इस वर्ष अंबिकी और जापा ग्राम पंचायतों में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम के तहत चार शिविर लगाये गये, जिनमें महिलाओं और नव–साक्षरों पर ध्यान दिया गया। दो स्वास्थ्य जागरूकता शिविर एच आई वी/ एड्स पर अंबिकी क्षेत्र के गांव समाल साही और जापा ग्राम पंचायत क्षेत्र के बरतोल गांव में लगाये गये। एड्स जागरूकता सप्ताह के मौके पर एक जागरूकता शिविर, लुथेरन वर्ल्ड सर्विस के सहयोग से 5 दिसंबर, 2005 को अंबिकी पंचायत के समाल साही समुदाय के लिए आयोजित किया गया। एक अन्य एड्स जागरूकता कार्यक्रम 15 मार्च को जापा ग्राम पंचायत क्षेत्र के बरतौल प्राथमिक स्कूल में किया गया।

दो अन्य स्वास्थ्य जागरूकता शिविर सांधा (अंबिकी) और छोबेई (जापा) गांवों में लगाये गये, जहां प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य, साफ–सफाई जल–जनित बीमारियों के साथ–साथ मलेरिया और टी बी जैसी आम बीमारियों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

1. समालसाही (अंबिकी) में लुथेरन वर्ल्ड सर्विस के सहयोग से 5 दिसंबर को लगे एच आई वी/ एड्स जागरूकता शिविर से 40 लोगों ने लाभ उठाया। इनमें ज्यादातर अनुसूचित जाति के वयस्क महिलाए और युवक थे।

2. सांधा, कैदा (अंबिकी) में 27 मार्च को लगे प्रजनन–शिशु स्वास्थ्य शिविर में 35 वयस्को और नव–साक्षरों ने भाग लिया।

3. बरतोल गांव (जापा) में 15 मार्च को एच आई वी/ एड्स जागरूकता शिविर में 48 महिलाओं, लड़कियों और नव–साक्षरों ने लाभ उठाया।

4. मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य और अन्य आम बीमारियों पर 30 मार्च, 2005 को छोबेई (जापा) में लगे जागरूकता शिविर में 58 महिलाओं, लड़कियों और नव–साक्षरों ने भाग लिया।

प्रौढ़ साक्षरता अभियान

समाज के कमजोर तबकों के लिए बुनियादी शिक्षा सुनिश्चित करने के अपने लक्ष्य के तहत प्रतीची ने इरसामा और तिरतोल ब्लॉक की चार ग्राम पंचायतों के 750 असाक्षर व्यस्कों को 75 साक्षर केंद्रों के जरिये अपने प्रौढ़ साक्षरता अभियान में शामिल किया। प्रतीची के प्रौढ़ साक्षरता अभियान में असाक्षर महिलाओं और कन्याओं पर खास ध्यान दिया इरसामा ब्लॉक में प्रतीची ने तीन ग्राम पंचायतों (अंबिकी, जापा और जिरैलों) के 400 असाक्षर व्यक्तियों के लिए 30 स्वयंसेवक की मदद से साक्षरता अभियान चलाया। तिरतोल ब्लॉक में प्रतीची, जिला साक्षरता समिति के सहयोग से कतरा और पतीलो ग्राम पंचायतों के 450 असाक्षरों के लिए साक्षरता अभियान चला रही है।

(i) साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रम

18 दिसंबर 2005 को जिला साक्षरता समिति के सहयोग से प्रतीची ने तिरतोल ब्लॉक की कतरा और पतीलो ग्राम पंचायतों के 50 स्वयंसेवकों के लिए एक दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया। ये कार्यक्रम कतरा के प्राथमिक स्कूल में आयोजित किया गया था।

(ii) साक्षरता अभियान

- साक्षरता अभियान में गति लाने के लिए, निम्नलिखित गतिविधियां चलाई गयीः
- कार्यक्रम सहायकों ने असाक्षर लोगों के घर जा कर, उन्हें साक्षरता कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।
- स्वयंसेवकों को प्रेरित करने और उनके दिशा निर्देशन के लिए प्रतीची ने दस मासिक बैठकें की
- 26 जनवरी, को प्रतीची स्कूल के छात्रों ने नागरी, समाल साही और कियादा गांव में साक्षरता रैली निकाली। ये पदयात्रा और साक्षरता नारों के साथ की गयी।

उपलब्धियां

साक्षरता अभियान में शामिल इरसामा ब्लॉक के 350 लोगों में से 220 ने साक्षरता का प्रथम प्राइमर पूरा कर लिया है और वे अब लिख और पढ़ सकते है। बाकी के 130 लोग साक्षरता पुस्तकमाला की प्राइमर– II पुस्तकें पढ़ रहे है।

तिरतोल ब्लॉक के 450 लोग साक्षरता अभियान में शामिल हैं। इनमें से 300 लोग प्राइमर –II पूरा कर, अब प्राइमर– III के स्तर पर हैं।

साक्षरता अभियान में शामिल कुल 800 लोगों से संबंधित विवरण इस प्रकार हैः

1. अंबिकी पंचायत के इरसामा ब्लॉक में 10 स्वयंसेवक सक्रिय हैं, जहां 115 लोग साक्षरता अभियान से फायदा उठा रहे है। इन सभी में 115 महिलाएं एंव कन्याएं है।
2. जाप ग्राम पंचायत में 19 स्वयंसेवक 220 लोगां को साक्षर बनाने में सक्रिय है इन सभी 220 में महिलाए और कन्याएं है।
3. जिरैलो ग्राम पंचायत में एक स्वयं सेवक 15 लोगों को साक्षर बना रहा है। यहां भी सभी की सभी महिलाएं और कन्याएं हैं
4. तिरतोल ब्लॉक की कतरा पंचायत में 26 स्वयंसेवक कुल 240 लोगों को साक्षर बनाने में जुटे है। इनमें महिलाओं और कन्याओं की संख्या 190 है।
5. तिरतोल ब्लॉक की पतीलो पंचायत क्षेत्र में 24 स्वयंसेवक 210 लोगों को साक्षर बनाने में मदद कर रहे है। इनमें महिलाओं और कन्याओं की संख्या 165 है।

ग्राम पुस्तकालय कार्यक्रम

प्रतीची नवसाक्षरों और अन्य लोगों में पढ़ने की आदत को बढ़ाने के मकसद से अंबिकी और जापा ग्राम पंचायत क्षेत्र के साथ समुदायों में ग्राम, पुस्तकालय कार्यक्रम चला रहा है। ये पुस्तकालय, सरकारी नीतियों संबंधी

सूचनाएं, विकास कार्यक्रमों के साथ–साथ स्वास्थ्य शिक्षा और आप बढ़ाने के तरीकों से संबंधित सूचनाएं भी उपलब्ध करवाते है। पहले चरण में पुस्तकालयों की सदस्यता दी गयी। इन पुस्कलायों में जो पुस्तकं उपलब्ध करवायी गयीं हैं– एच आई वी/ एड्स मातृ एंव शिशु स्वास्थ्य, मातृ एंव शिशु टीकाकरण, टीवी और मलेरिया विषयक स्वास्थ्य संबंधी पुस्तकें। पंचायती राज व्यवस्था, राजनीतिक अधिकार और नागरिक अधिकारों और भूमिका संबंधी राजनीतिक विषयक पुस्तकं, महिला अधिकार और संवैधानिक अधिकारों संबंधी पुस्तके, और सरकारी परियोजनाओं–कार्यक्रमों, वृक्षरोपण और राष्ट्रीय स्तर पर चलाये जा रहे अभियानों पर सामाजिक विषय की पुस्तकें।

ग्राम पुस्तकालयों का विवरण

1. नागरी (अंबिकी) में चल रहे पुस्तकालय में 20 सदस्य/पाठक है। यहां प्रतीची सौर–ऊर्जा से चलने वाले प्रकाश उपकरण, किताबें, दरियां, अल्मारी के अलावा पत्र– पत्रिकाएं उपलब्ध करवायी है।

2. समाल साही (अंबिकी) के पुस्तकालय में 30 सदस्य/पाठक है। यहां प्रतीची अल्मारी के अलावा अखबार, छोटी किताबें, दरी और पत्रिकाएं उपलब्ध करवायी है।

3. हनगोथा (अंबिकी) पुस्तकालय में 35 सदस्य/पाठक हैं। यहां प्रतीची ने पुस्तकें उपलब्ध करवायी है।

4. सुनाछा (जापा) पुस्तकालय का लाभ 60 सदस्य/पाठक उठा रहे है। यहां प्रतीची ने अल्मारी और किताबें उपलब्ध करवायी है।

5. एक पुस्तकालय सहानैत्ता (जापा) में चल रहा है, जहां 40 सदस्य/पाठक है। इनके लिए प्रतीची ने किताबें, दरियां, रैक और अखबार उपलब्ध करवा रहा है।

6. छोबेई (जापा) के पुस्तकालय के 40 सदस्य/पाठकों के लिए प्रतीची किताबे और पत्रिकाए दे रहा है।

7. कोच्छिला (जापा) के पुस्तकालय के 45 सदस्यों/ पाठकों के लिए प्रतीची ने रैक तो उपलब्ध करवायी ही हैं, किताबें और पत्रिकाएं भी दे रहा है।

प्रतीची की प्रेरणा से शुरू प्रत्येक पुस्तकालय का विवरण इस प्रकार है।

1. ग्राम पुस्तकालय, नागरी

अंबिकी ग्राम पंचायत के कियादा राजस्व गांव की एक बस्ती (वार्ड नंबर–3) में नागरी समुदाय केंद्रित है। ये इरसामा ब्लॉक मुख्यालय से पांच किलोमीटर दूर है।

सामाजिक–जनगणनात्मक स्थितिः

(क) नागरी समुदाय की कुल आबादी 276 है, और यहां कुल 52 परिवार हैं। इनमें 139 पुरूष और 137 महिलाएं है। यहां 10–18 वर्ष के बीच की आठ लड़कियां और 12 लड़के है।

(ख) शिक्षा सुविधाः इस समुदाय के लिए प्रतीची एक स्कूल चला रहा है।

आवासः चक्रवाती तूफ़ान के बाद टाटा राहत संगठन की ओर से सभी के लिए पक्के रिहायशी मकान। लेकिन किसी भी मकान में न तो अलग पाखाने, या सार्वजनिक शौचालय की व्यवस्था है।

पेयजलः पुरे समुदाय को पेय जल उपलब्ध करवाने के लिए एक ट्यूबवेल है।

अन्य संसाधनः टाटा रिलीप का बहुआयामी सामुदायिक केंद्र।

मुख्य व्यवसायः खेती, मछली पालन और अन्य छोटे–छोटे काम।

मुख्य समस्याएंः निरक्षरता, बाल विवाह की प्रवृति, पेय जल समस्या, साफ–सफाई और गंदगी–निकासी का अभाव।

प्रतीची की ओर से सहयोगः

स्कूल कार्यक्रम, समय–समय पर चिकित्सा जांच, साक्षरता अभियान और ग्राम पुस्तकालय कार्यक्रम।

बहुआयामी सामुदायिक भवन के एक हिस्से में ग्राम पुस्तकालय चलाया जा रहा है। इस पुस्तकालय के लिए प्रतीची ने सौर–ऊर्जा चलित प्रकाश उपकरण, नवसाक्षरों के लिए 40 पुस्तकें, दो खुली रैक, दरियों के अलावा विज्ञान तथा कृषि विषयक पत्रिकाएं जैसे अन्नपूर्णा, विज्ञान दिगंत, विज्ञान पर्व उपलब्ध करवायी है। उड़ीया दैनिक समाज भी इस पुस्तकालय के लिए मंगवाया जाता है। पुस्तकालय का संचालन श्री बर्द्धमान स्वैन कर रहे है, जो प्रतीची उड़ीसा प्रोजेक्ट के वरिष्ठ शिक्षक हैं।

2. समाल साही ग्राम पुस्तकालय

समालसाही, अंबिकी ग्राम पंचायत के राजस्व गांव कियादा के वॉर्ड नंबर चार की बस्ती है। इस बस्ती में सभी अनुसूचित जाति के परिवार हैं, और ज्यादातर छोटे या भूमिहीन किसान है। ये अंबिकी पंचायत की सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा में सबसे पिछड़ी बस्तियों में एक है।

सामाजिक–जनगणनात्मक स्थितिः

(क) कुल आबादी 136 है, जिनमें कुल 29 परिवार हैं। पुरूषों की संख्या की 69 और 67 महिलाएं हैं। सभी परिवार गरीबी रेखा के नीचे गुजर–बसर करने वाले परिवार हैं। यहां 10–18 आयु वर्ग के बीच 13 लड़के 9 लड़कियां है।

(ख) शिक्षा सुविधाः इस समुदाय के करीब ही प्रतीची स्कूल स्थित है।

आवासः सभी परिवारों के रिहायश के लिए टाटा जिलीफ के सौजन्य से पक्के मकान है।

पेयजलः एक ट्यूबवेल पूरी आबादी के लिए पेय जल का स्त्रोत है।

मुख्य व्यवसायः बांस के उत्पादों से वस्तु निर्माण, पट्टे पर खेती था दैनक मजदूरी मुख्य व्यवसाय है।

मुख्य समस्याएंः आबादी शैक्षिक और आर्थिक रूप से एकदम पिछड़ी हैं।

प्रतीची को ओर से सहयोग

समाल साही में प्रतीची की भूमिका 25 अनपढ़ व्यक्कों को साक्षर करने स्वास्थ्य कार्यक्रम मसलन चिकित्सा शिविर, स्वास्थ्य जागरूकता बैठकों के अलावा वृक्षारोपण और पुस्ताकालय कार्यक्रम तक सीमित हैं

समाल साही में अभी तक पुस्तकालय एम कमरे में चल रहा था, जिसका निर्माण समाल साही के युवकों ने किया था। लेकिन कुछ कारणों से अब इस कमरें का इस्तेमाल पुस्तकालय के लिए नहीं हो रहा।

फिलहाल यहां पुस्तकालय एक गांव वाले के घर में चल रहा है। उड़ीया दैनिक संवाद यहां के लिए नियमित मंगवाया जाता है। पुस्तकालय के लिए खुली लकड़ी की अल्मारी, दो दरियों के अलावा नवसाक्षरों के लिए 65 पुस्तके उपलब्ध करवायी गयी है। पत्रिकाएं भी नियमित मंगवाई जाती है। इसके सदस्य/ पाठकों में महिलाएं, नवसाक्षर, किशोरियां और युवक है। कुछ सदस्य संख्या 30 है। दो स्वयंसेवी शिक्षक प्रकसिनी दास और स्त्रोतस्मिनी दास इस पुस्तकालय का संचालन कर रही है।

3. हानागोथा ग्राम पुस्तकालय

हानागोथा, अंबिकी ग्राम पंचायत के राजस्व गांव कियादा के वार्ड नंबर पांच की एक बस्ती है। ये इरसामा ब्लॉक मुख्यालय से सात किलोमीटर और अंबिकी ग्राम पंचायत 8 के दफ्तर से दो किलोमीटर की दूरी पर है। यहां के सभी परिवार बंगालियों के है और घर बेतरनीब ढंग से फेले हैं। आज तक, इस बस्ती को शेष दुनिया से जोड़ने के सही उचित सड़क नहीं हैं।

सामाजिक–गणनात्मक स्थिति

(क)हानागोथा की कुल आबादी 239 है, जिसमें 119 पुरूष और 120 महिलाएं है। कुल मिलाकर 58 परिवार है। किशोरावस्था में 18 लड़कियां और 14 लड़के है। मैट्रिक पास लोगों की संख्या 6 है। कुछ 54 बी पी एल परिवार है, यानी ये गरीबी रेखा से नीचे है।

(ख) शिक्षा–सुविधा: सबसे निकट का प्राइमरी स्कूल कियादा में, एक किलोमीटर दूर है। यहां से अंबिकी हाई स्कूल दो किलोमीटर दूर है।

आवास : चक्रवाती तूफ़ान के बाद इंडिया टुडे समूह की ओर से प्रत्येक परिवार को पक्के मकान दिये गये थे।

पेयजल : पूरी बस्ती में पेयजल के लिए एक ही ट्यूबवेल है।

मुख्य व्यसाय: खेती–बाड़ी, पट्टे पर खेती, मछली पालन और देनिक मजदूरी यहां के मुख्य व्यवसाय हैं।

मुख्य समस्याएं: शैखिक पिछड़ापन, ज्यादातर स्कूली बच्चों द्वारा स्कूल जाना बंद कर देना, कम उम्र में विवाह, गांव तक पक्के और उचित सड़क का अभाव, साफ–सफाई की कमी मुख्य समस्याएं है।

प्रतीची की ओर से सहयोग: साक्षरता गतिविधि और पुस्तकालय कार्यक्रम

इस बस्ती में पुस्तकालय कार्यक्रम नवसाक्षरों के लिए 40 पुस्तकों से हुआ। आज ये पुस्तकालय एक्शन एंड संगठन द्वारा मिट्टी की दिवारों और छपपर से निर्मित एक कमे–जिसे मामत गृह कहते है, उसमें चल रहा है। एक्शन एंड ने चक्रवाती तूफान के बाद गोदरेज की एक स्टील अल्मारी और करीब 3000 रुपये मूल्य की किताबें भी उपलब्ध करवायी है, जिनका इस्तेमाल काफी समय तक नहीं हुआ था। प्रतीची ने हस्तक्षेप किया और तब उसके स्वयंसेवकों और प्रोजेक्ट स्टॉफ ने गांव वालों, युवकों और समुदाय के बुजुर्गो को पुस्तकालय के इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया। प्रतीची की ओर से कुछेए सुविधाएं और जोड़ी गयीं। प्रतीची के हस्तक्षेप के बाद एकसही व्यवस्था बन पायीः पुस्तकालय के लिए एक ग्रामीण कमेटी का गठन हुआ प्रतीची साक्षरता अभिमान की स्वयंसेविका शांतिलता गदेरी ने इस पुस्तकालय का काम संभाला। पुस्तकालय में 35 सदस्य बनाये गये, जिसमें 15 लोग, प्रतीची साक्षरता कार्यक्रम से लाभ उठा रहे नवसाक्षर थे।

4.सुनादिया ग्राम पुस्तकालय

इरसामा ब्लॉक मुख्यालय से आठ किलोमीटर दूर जापा ग्राम पंचायत का एक राजस्व गांव है सुना दिया। अपर्याप्त संपर्क सुविधा और शिक्षा का अभाव यहां की दो प्रमुख समस्याएं है। बरसात के मौसम से इस गांव का बाकी दुनिया से संपर्क टूट जाता है। प्राइमरी और हाई स्कूल, दोनों गांव से दो किलोमीटर दूर है। 6 से दस साल के आयुवर्ग के कई बच्चे यहां है। हालांकि पांच साल पहले शिक्षा गारंटी योजना में हर तरह इस गांव के लिए एक स्कूल की स्वीकृति मिली थी, लेकिन ये स्कूल आज तक शुरू नही हो पाया।

सामाजिक–जनगणनात्मक स्थिति

(क) सुना दिया गांव की कुल आबादी 312 है, जिसमें कुल 64 परिवार है। गांव में 158 पुरूष, और 154 महिलाएं है। किशोरावस्था में 26 लड़कियां और 31 लड़के है। मैट्रिक पास लोगों की संख्या तीन है।

(ख) शिक्षा साधन : सभी स्कूल दो किलोमीटर से ज्यादा की दूरी पर स्थित हैं।

आवासः गांव के सभी मकान कच्चे हैं

पेयजलः गांव की आबादी को पीने–का पीन उपलब्ध करवाने के लिए ट्यूबवेल हैं।

मुख्य व्यवसायः खेती–बाड़ी, पट्टे पर खेती, दिहाड़ी मजदूरी, मछली पालन काम के मुख्य स्त्रोत हैं।

मुख्य समस्याएंः बरसात के मौसम में गांव से संपर्क टूट जाना, शिक्षा के लिए स्कूलों का अभाव।

प्रतीची की ओर से सहयोगः इस गांव में प्रतीची चार साक्षरता केंद्र चला रहा है,

जिसका लाभ 40 नवसाक्षर उठा रहे है। एक ग्रामीण पुस्तकालय भी शुरू किया गया है। पुस्तकालय, गांव के सामुदायिक भव के एक कमरे में चल रहा है।

आरंभ में बांस की दो खुली अल्मारियां और 50 किताबें पुस्तकालय को दी गयीं थी ज्यादातर ग्रामीण शाम को पुस्तकालय में बैठ कर लाभ उठाते है। श्री गौतम पत्रो इस पुस्तकालय में इंचार्ज है। कुल सदस्यों / पाठकों की संख्या यहां 60 है।

5. ग्राम पुस्तकालय, साहानियत्ता

साहानिआत्ता, जापा ग्राम पंचायत के राजस्व गांव बरतोल का एकवार्ड है। ये अनुसूचित जाति के लोगों की बस्ती है।

सामाजिक–जनगणनात्मक स्थिति

(क) सहानिऊता गांव की कुल आबादी 132 है। इनमें कुल परिवार 29 है, और ये सभी गरीब रेखा से नीचे के यानी बी पी एल परिवार हैं। गांव में पुरूषों की संख्या 64 और महिलाओं की संख्या 68 है। किशोरावस्था में 12 लड़के और 18 लड़कियां है। गांव में कुल पांच लोग मैट्रिक पास है।

(ख) शिक्षा सुविधाएं: निकटतम स्कूल, गांव से एक किलोमीटर की दूरी पर हैं

आवास: गांव के सभी परिवारों के रहने के लिए पक्के मकान हैं।

मुख्य व्यवसाय: यहां के लोगों के लिए दिहाड़ी मजदूरी, साझा और मछली पालन मुख्य व्यवसाय हैं

मुख्य समस्याएं: संपर्क साधनों का अपर्याप्त होना, गांव में बिजली का अभाव और गंदे पानी और गंदगी की निकास व्यवस्था का अभाव।

प्रतीची की ओर से सहयोग:

इस गांव में प्रतीची साक्षरता अभियान और गांव पुस्तकालय योजना के जरिये अपना योगदान दे रहा है। प्रतीची के साक्षरता अभियान के चलते ही 22 निरक्षर लोगों में से 14 आज पढ़ने–लिखने लायक हो गये है। साक्षरता अभियान में शामिल गांव वालों ने ही एक कमरा बनाया है, जिसमें आज पुस्तकालय चल रहा है। इस पुस्तकालय के लिए बांस की दो खुली अल्मारियां, दरियां और 50 किताबे मुहैया करवायी गयी हैं। इस पुस्तकालय में 40 सदस्य/पाठक हैं। साक्षरता अभियान के एक स्वयंसेवक सुसांमा मलिक इसपुस्तकालय के इंचार्ज हैं।

6.छोबेई ग्राम पुस्तकालय

छोबेई, जापा ग्राम पंचायत का एक राजस्व गांव है, जो इरसामा से आठ किलोमीटर दूर है है।

सामाजिक–जनगणनात्मक स्थिति:

(क) छोबेई गांव की कुल आबादी 290 है, जिसमें परिवारों की कुल संख्या 56 है। आबादी में 152 पुरूष और 138 महिलाएं है। किशोरावस्था में चल रहे लड़कों की संख्या 24 और लड़कियों की संख्या 22 है। गांव भर में मैट्रिक पास लोगों की कुल संख्या 15 हैं।

(ख) शिक्षा साधन: छोबेई गांव में सिर्फ एक ही स्कूल है, वो है प्राइमरी स्कूल।

पेयजलः गांव की समस्त आबादी के लिए पेयजल का स्त्रोत तीन ट्यूबवेल है।

मुख्य व्यवसायः खेती–बाड़ी, मवेशी, व्यापार और दिहाड़ी मजदूरी गांव के मुख्य व्यवसाय है।

मुख्य समस्याएंः महिलाओं में निरक्षरता

प्रतीची की ओर से सहयोगः

प्रतीची के सहयोग से गांव में तीन साक्षरता केंद्र चल रहे है, जिनका लाभ 40 निरक्षर लोग उठा रहे है।प्रतीची एक पुस्तकालय के लिए कुछ किताबें मुहैया करवायी गयी है। फिलहाल ये पुस्तकालय गांव के एक कच्चे मकान में चल रहा है और इसके सदस्य। पाठकों की संख्या 40 है। साक्षरता अभियान से जुड़े स्वयंसेवक जूनी बाला स्वैन और नितारानी से भी इस केंद्र संचालन कर रहे है।

7. कोच्छिला ग्राम पुस्तकालय

इरसामा ब्लॉक में ब्लॉक मुख्यालय से ग्यारह किलोमीटर, जापा पंचायत क्षेत्र का एक राजस्व गांव है कोच्छिला सामाजिक–जनजागणनात्मक स्थिति

(क) कोच्छिला गांव की कुल आबादी 280 है। गांव में कुल परिवारों की संख्या 62 हैं। गांव में 145 पुरूष है। महिलाओं की संख्या 135 है। किशोरावस्था में चल रहे लड़कों की संख्या 20 और लड़कियों की संख्या 18 है। गांव भर में मैट्रिक पास लोगों की कुल संख्या चार है।

(ख) शिक्षा साधानः छोबेई गांव में एक कोई स्कूल नहीं है। निकटतम स्कूल तीन किलोमीटर है।

पेयजलः पूरी आबादी को पेयजल मुहैया करवाने के लिए गांव में तीन ट्यूबवेल हैं।

मुख्य व्यवसायः खेती–बाड़ी, साझा पट्टे पर खेती और दिहाड़ी मजदूरी कमाई के मुख्य तरीके हैं।

मुख्य समस्याः शिक्षा का अभाव और निरक्षरता।

प्रतीची की ओर से सहयोगः

वर्ल्ड विज़न के सहयोग से निर्मित एक सामुदायिक भवन से गांववालों के लिए साक्षरता अभिमान की शुरूआत की गयी। नवसाक्षरों के लिए 45 किताबों के अलावा बांस की एक खुली अल्मारी पुस्तकालय को दी गयी। यहां के सदस्य/पाठकों की संख्या 45 है– और इस पुस्तकालय का संचालन साक्षरता अभियान के स्वयंसेवी सुजाता मोहंती कर रही हैं।

ग) प्रतीची को आवंटित जमीन की भराई के लिए श्रमदान और स्वयंसेवकों का सहयोग

प्रतीची स्कूल के अभिभावकों और स्वयंसेवकों की मदद से मिट्टी भराई का काम इससाल किया गया। इससे 15 फीट चौड़ी चार फीट ऊंची करीब 110 फीट

लंबी संपर्क सड़क के निर्माण की दिशा में 90 फीट लंबा, 50 फीट चोड़ा 2.5 फीट ऊंचा आधार क्षेत्र पूरा कर लिया गया है।

XI अनुदान एवं सहायता

प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए व्यक्यिों और छोटे संगठनों को थोड़ी–बहुत आर्थिक मदद भी मुहैया करवाता है। ये आर्थिक मदद बहुत थोड़ी और अमूमन एक बारगी अनुदान के रूप में दी जाती है। ट्रस्ट, अन्य संगठनों द्वारा चलाये जा रहे धमार्थ कार्यों, और जरूरत मंद व्यक्तियों को छोटे–छोटे अनुदना और सहयोग देकर मदद भी करता है।

इंस्पीरेशन को अनुदान

इस्पीरेशन, मुनाया न कमानेवाली एक रजिस्टर्ड कल्याणकारी संस्था है, जो मानसिक विकलांगों की शिक्षा, राहत और उनके पुर्नवास के काम में सक्रिय है। प्रतीची ने इस वर्ष भी संस्था को उसके प्रोजेक्ट *अर्ली–इंटरवेशनकम–प्रीप्राइमरी डे केयर सेंटर फॉर मेंटली डेफीसिएंट चिल्ड्रेन* को सहयोग जारी रखा। ये प्रोजेक्ट दिल्ली महानगर और आस–पास के उपग्रही शहरों में चल रहा है। इस कार्यक्रम का मकसद मानसिक विकलांगता से पीड़ित बच्चों की कम–उम्र में मदद करना है, ताकि वे वर्ताव में अनैच्छिक बदलाव ऑन से पहले ही कम उम्र में स्वावलंबी होने के गुर सीख सकें। इंस्पीरेशन से मदद ले रहे 50 प्रतिशत बच्चे स्लम और निम्न–आय वर्ग के है।

XII निष्कर्ष

प्रतीची के शोध कार्य और विकास और कल्याणकारी गतिविधियां एक नये दौर में पहुंच गयी हैं। प्रतीची ने कई अध्ययन किये, उन्हें पूरा किया और नये अध्ययन शुरू किये। मसलन कलकत्ता में सरकारी स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा का प्रभाव, स्व सहयोगी समूहों और महिला अधिकारियों की संभावनाएं, पश्चिम बंगाल में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति, देश के विभिन्न हिस्सों खासकर केरल में प्राथमिक शिक्षा और बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति।

उड़ीसा प्रोजेक्ट के तहत नागरी गांव में शुरू किये गये स्कूल, और स्वास्थ्य सेवाओं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम और ग्राम साक्षरता कार्यक्रमों के तहत प्रतीची (इंडिया) ट्रस्ट की पहल का सकारात्मक असर हुआ है। जगतसिंहपुर जिले के दो सामुदायिक विकास खंडों इरसामा और तिरतोल में शुरू किया गया पूर्ण साक्षरता अभिमान, पढ़ाई–लिखाई के दौर में पहुंच गया है। प्रतीची द्वारा स्थापित सात ग्रामीण पुस्तकालय, पढ़ाई की आदत बनाये रखने में नवसाक्षरों, और स्कूल जाने वाले बच्चों की मदद कर रहे हैं। प्रतीची द्वारा आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम ने इरसामा ब्लॉक के गैर–सरकारी स्कूलों के शिक्षकों को प्रशिक्षित कर उन गांवों के छात्रों को शिक्षित करने में मदद की है, जहां सरकारी कोशिशें पहुंच ही नहीं सकी।

प्रतीची ट्रस्ट अभी भी अपने शैशव अवस्था में है और उसे मीलों आगे जाना है। उसकी शोध गतिविधियां और सामाजिक विकास की दिशा में हस्तक्षेप, भारत में शिक्षा और जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में हस्तक्षेप, भारत में शिक्षा और जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में दूरगामी छाप छोड़ेगें।